मुकुल परिवार

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण पूर्व रेलवे

दाहिने से:

श्रीमती सुप्रिया सिंह, निदेशक,
श्री संदीप सिंह, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
श्रीमती सन्युक्ता भादुरी, हिन्दी अधिकारी,
श्री आशीष मोहन सिंह, वरिष्ठ अनुवादक,

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक	:	संदीप सिंह, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
प्रकाशन परामर्शदाता	:	सुप्रिया सिंह, निदेशक
संपादक	:	सन्युक्ता भादुरी, हिन्दी अधिकारी
सह संपादक	:	आशीष मोहन सिंह, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
स्वत्वाधिकारी	:	प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
अंक	:	एकतीसवां
प्रकाशक	:	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट: लेखकों के विचारों एवं लेख का उत्तरदायित्व उनका अपना है, संपादक मंडली का नही।

अनुक्रमणिका

क्रम	कहानी/लेख/कविताएं		पृष्ठ
	संदेश		
1.	मुख्य संरक्षक का संदेश		1
2.	प्रकाशन परमर्शदात्री का संदेश		2
3.	संपादकीय		3
	रचनाएँ		
4.	मेरा भारत महान	कविता	
5.	कवि	कविता	
6.	मैं और वो	कविता	
7.	एक बसेरा	कविता	
8.	हिन्दू या मुसलमान	कविता	
9.	औरत	कविता	
10.	आधुनिकता करे पुकार...	कविता	
11.	मेरा भारत महान	लेख	
12.	कवि	लेख	
13.	वयस्क चर्चा	लेख	
14.	धन से बढ़कर स्वास्थ्य	लेख	
15.	भारत जैसे आतंकवादियों का खेल का मैदान	लेख	
16.	क्या हम कमजोर है ?	लेख	
17.	पार्यावरण – धर्म और विज्ञान	लेख	
18.	दान एवं दया का महत्व	लेख	
19.	नारी-अनंतता	लेख	
20.	किसी की भी महानता	लेख	
21.	एक नारी की कहानी उसी के जुबानी	कहानी	
22.	एक अनोखा रिश्ता	कहानी	
23.	इच्छापूर्ति	कहानी	
24.	रिश्ते कमाना सीखें !	कहानी	
25.	पिता की सीख	कहानी	
26.	चलो निकल पड़े	कहानी	
27.	जीवन रेखा	कहानी	
28.	नीति की कुछ बातें	प्रेरक प्रसंग	
29.	पुरस्कृत पदाधिकारियों की सुची		
30.	मानक शब्दावली		
31.	सेवा निवृतियाँ		
32.	श्रद्धांजलि		

सत्यमेव जयते

संदेश

कार्यालयीन वार्षिक पत्रिका "मुकुल" के 31वें अंक का प्रकाशन करते हुये मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पायदान पर पहुँचने में हमें न केवल अपने विभाग के रचनाधर्मियों का सहयोग मिला बल्कि उनके परिवार के नन्हें सदस्यों ने भी सहयोग दिया है। इस कार्यालय में अहिन्दी भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या बहुतायत है, फिर भी पत्रिका में सभी बढ़-चढ़ कर रचनाएँ देते हैं। राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहन देने एवं गौरवशाली बनाने में तथा उसके प्रति शुद्ध राष्ट्रभावना को देखकर हृदय गदगद हो जाता है। उनके सहयोग से पत्रिका आज इस मुकाम पर पहुँच सकी है। हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने में "मुकुल" एक समन्वय का जरिया है और राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की पृष्ठभूमि में कार्यरत एवं समर्पित कार्यालयी सदस्यों की निष्ठा का द्योतक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आपकी सहभागिता हमें निरंतर मिलती रहेगी।

"मुकुल" पत्रिका के उत्तोरत्तर विकास एवं प्रगति के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

सत्यमेव जयते

संदेश

यह बहुत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "मुकुल" का 31वाँ अंक आपके कर कमलों में है। "मुकुल" पत्रिका में रचनाओं के रचनाकारों को मेरासाधुवाद।

किसी भी देश के नागरिक के लिए राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीयगान का जितना महत्व होता है उतना ही महत्व राष्ट्रभाषा का भी होता है। भाषा हमारी पहचान होती है इसीलिए यह हमारा दायित्व है कि हम इसे सम्मान दें।

कार्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ-साथ उनके परिवार के सदस्यों को उनके सुरुचिपूर्ण रचनाओं से "मुकुल" को सजाने के लिए धन्यवाद। आशा करती हूँ, भविष्य में आप सब भी पत्रिका में रचना देकर अपनी भावभ्यिक्ति और सृजनशीलता का विकास करें।

मैं पत्रिका के संपादक मंडली एवं रचनाकारों एवं प्रबुद्ध पाठकों का शुक्रिया अदा करती हूँ। आगामी अंक के लिए बधाई।

निदेशक

सत्यमेव जयते

संपादकीय

संपादक की कलम से .....

साहित्यकाश में पत्रिकाओं की भूमिका छोटे – छोटे तारक के समान है जो साहित्यकाश को आलोकित करती है । मानस मन अपने भावों को माला के तरह पिरोती है और उसे जब लेखनी के मधायम से शब्दों से सजाती है तब बनता है कहानी, कविता या लेख। "मुकुल" यानि कली या आत्मा। अर्थात हमारी "मुकुल" पत्रिका वह कली है जो हम सबके हृदय में बसती है। यह वह छोटा सा शब्द है जो "गागर में सागर" भरने का काम करती है।

"मुकुल" का प्रकाशन हिन्दी भाषा के प्रति पदाधिकारियों के श्रद्धा को दर्शाती है। हिन्दी के प्रति कर्मचारियों और अधिकारियों का सकारात्मक दृष्टिकोण हीं "मुकुल" पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाती है और उनका यह लगन "मुकुल" के लिए अमूल्य धरोहर है।

आशा है कि यह पत्रिका सबको पसंद आएगी। कृपया अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएं।

(हिन्दी अधिकारी)

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- शब्दों के लिए अटकिये नही।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिये।

संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नही है। रचनाकर के विचार स्वतंत्र होते हैं।

संदीप सिंह,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

मेरा भारत महान

ये जो मेरा भारत महान
यह है सृष्टि की शान,
यह पृथ्वी एक चक्र एक मंदुल
यह देश उसकी सदा बहती जान,
यहाँ था सदा यह जोश
नहीं अंदर तेरे कोई दोष,
जाग मनुष्य जाग
कर 'अह ब्रम्हाश्मि' का उद्घोष,
यहाँ बोले थे हमेशा संत
तेरा नही कोई है आदि कोई अंत,
यहाँ गूँजे थे बुद्ध नानक
मीरा, कबीर और तंत्र,
यहाँ गया था यह सिखाया
ईश्वर तुम में है समाया,
जिसने अपनी आत्मा को पहचाना
उसने परमात्मा परमेश्वर को पाया,
अनेक उसके रूप, अनेक उसके रंग,
विविध उसके रास्ते, विविध उसके ढंग,
वह पूर्ण, पराकाष्ठा परिणाम चले हमारे संग
हम उसके सम्पूर्ण जीते जगते अंग,
यह था इस देश का ज्ञान
जहाँ भक्त अपने को देता है दान,
जहाँ प्रेम ही धर्म, प्रेम ही कर्म, प्रेम ही शर्म,
ऐसा महान मेरा हिंदुस्तान।

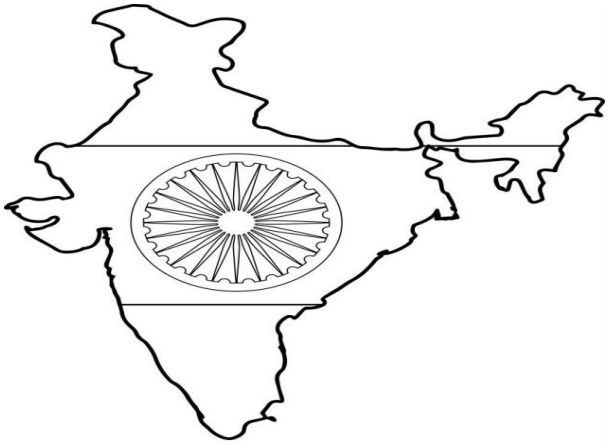

संदीप सिंह,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

कवि

कवि का कर्तव्य, कवि का काम
छलकना जिंदगी का भरा हुआ जाम,
उसका सार, स्त्रोत, उसकी सृष्टि
देना अंधों को दूसरी दृष्टि,
वह मौन में जाता है
वह बसंत की खबर लाता है,
सच तो वह अपनी रूह की अपने
खून अपनी खुशबू की गाता है,
वह दायरे तोड़ता है
वह तथ्य मरोड़ता है,
कवि बिगाड़ता नही
पर विपरीत को भी जोड़ता है,
उसका धर्म है प्यार
उसका नफरत है दिल का व्यापार,
वह दिखाये रास्ता
जो ले जाये उस पार,
वह जलाए आत्मा में एक चिराग
धधक-धधक के बन जाये जो आग,
कहता वह, पागलों सोओ न
आयी सुबह की किरण, जागना है तो जाग।

मैं और वो

श्री रणोजीत बंद्योपाध्याय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मै चलता जा रहा हूँ, चलता ही जा रहा हूँ
ऊपर से हरियाली ने कहा
जब तुम चलते हो मेरी छाया तले
तुम्हें दुलारते हुए मैं भी तो तुम्हारे साथ ही चलती हूँ।
सन-सन शब्द करते हवा बोली
मुझसे होकर जब तुम गुजरते हो
चूमते हुए तुम्हारे हर एक अंग को
मैं तुम्हारे संग हो लेती हूँ
गुनगुनाते सात स्वरों ने कहा
मेरे गली से जब तुम निकलते हो
अपनी ही भाषा में गुनगुनाते, मन बहलाते
हम सब भी तुम्हारे साथ ही तो चलते हैं।
तभी झिलमिलाते चाँद ने कहा
जब तुम मेरे चाँदनी के आलोक तले चलते हो
मैं अपने प्रकाश का चादर तुम पर बिछाये
तुम्हारे साथ चल पड़ती हूँ।
हँसते हुए सूरज ने कहा
धूप सर पर लिए जब तुम चलते हो
जीवन का प्रकाश बिखेर नरम- गरम आलोक लिए
मैं तुम्हारे साथ ही तो चलता हूँ।
अचानक सभी विलीन हो गए और
मेरे साथ खड़े एक शख़्स में समा गए
जो था एक दूसरा मैं, मेरा हमसक्ल।
मैं चल रहा हूँ, चलता ही जा रहा हूँ।
अपने छोटे अस्तित्व को लिए
बड़े अस्तित्व की खोज में।

एक बसेरा

संयुक्ता भादुरी, हिन्दी अधिकारी

दिल तलाशता हैं एक ऐसा बसेरा, जहाँ खुशी से भरा हो हर इक सवेरा।

किसी को खूद पर गुमान न हो, सबके लिए मान हो असम्मान न हो।

अपने लिए न जी कर अपनों के लिए जिये,आँसू पी जाए दूसरों के खुशी के लिए।

त्याग और प्यार की भावना मन में लिए, भरोसे के अग्नि से जलाए दिये।

छोटे ही नहीं बड़े भी सबका सम्मान करें, इंसानियत को मान भेदभाव से डरें।

अभाव भले ही हो पर भाव न हो, दिखावे की रोटी की चाव न हो।

सुबह की सूरज खुशी का प्रकाश दिखाये, रात की चाँद बेखौफ सुलाए।

अपनों का ही नहीं परायों का भी मान करें, अमीर या गरीब नहीं इंसान का सम्मान करें।

सीख ऐसी हो जिसपर खूद भी अमल करें, सिखाने से पहले खूद उस पथ पर चलें।

सच को अपनाकर राह पर चलें, आदर्श पथ से कभी न टले।

हर कोई गर तलाशे ऐसा बसेरा, हो सकता हैं हर घर हो स्वर्ग से न्यारा।

हिन्दू या मुसलमान

संबर्त चट्टोपाधाय,
सुपुत्र संपद चट्टोपाध्याय,
स.ले.प.अ.

भारत माता के हृदय में
सौंपा हैं मैंने प्राण
क्या कह सकता हैं कोई, मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान॥
हे माँ
दो तुम मुझे वरदान ऐसे जीवन का
जिससे एहसास न हो किसी को मेरे मौत का॥
आज
मृत हैं इंसानियत, मृत हैं सम्पूर्ण देश
आज सत्यम, शिवम, सुंदरम का पुजारी हुआ शेष॥

मुझे शक्ति दो, बुद्धि दो, दो मुझे बल और शौर्य,
व्यर्थता को मिटाकर सफल करूँ हर कार्य॥

हे ईश्वर, हे अल्लाह, हे वेगंवर
अपने हृदय की पवित्र जल में कराकर स्नान
आसुरिक शक्ति को करो म्लान।
आज भेदभाव की भावना से जकड़ा हैं ये देश
मिटाकर यह द्वेष बदलो तुम परिवेश।

क्या अकेला कोई गा सका हैं एकता का गान?
हिन्दू- मुसलमान का हो एक ही सूर और ज्ञान,
करे सब एक दूजे का सम्मान,
मन में हैं बस यहीं एक अरमान।

एक ही धरती में बड़े हुए, मिला एक सा ज्ञान
आज फिर यह कैसा सवाल कौन हिन्दू कौन मुसलमान',
आज करे हम एक शपथ, लेकर मन में अरमान
भेदभाव को मिटाकर चलो बने इंसान।

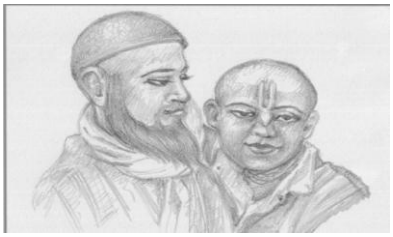

संदीप सिंह,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

औरत

नारी, औरत, प्रेमिका, देवी
तू ही प्रकृति तू ही प्रलय
तू ही मिलन
और सभी तत्वों का विलय
तू ही भक्त की भक्ति
तू ही सच की शक्ति
तू ही यह ताना-बाना, यह जाल
ओसी सी मासूम, भयानक जैसे काल
जब तू करती प्यार
तू ले जाती उस पार
जब करती तू क्रोध
बौद्धिक-पुरुष भी भूल जाते अपना बोध
साधु, स्वामी, संत ने किया हमेशा तेरा तिरस्कार
यही थी उनकी सबसे बड़ी हार
उन्हें फिर जन्म पाना पड़ा
उन्हें तेरी शरण, तेरी बाँहों में आना पड़ा
तू ही पुरुष का कारण
तुझे ही शिव करते हैं धारण
तू ही मंगेतर, माँ और मूल
तू ही सत्य, शोला और शूल
तू ही मंजिल। मांझी, माया
तू ही छल, छंद, तपते धूप में छाया
तू ही शिव-सती का सार
तू ही पागलपन, तू ही प्यास, तू ही प्यार।

आधुनिकता करे पुकार.....

संबर्त चट्टोपाधाय,
सुपुत्र संपद चट्टोपाध्याय
स.ले.प.अ.

अब सबकुछ हैं नया- नया, सबकुछ है अलग- अलग;
पड़ोस के उस घर की बुढ़िया की अश्रुसिक्त आंखे
और आफिस जाती माता- पिता के एकलौते संतान की बेचैन आँखें
रखती हैं चाह मन में, एक शाम मिलकर बिताने की
पर उनका इंतज़ार पुकारता हैं –
यह आधुनिकता है।
अब सबकुछ हैं नया- नया, सबकुछ हैं अलग- अलग;
घर- घर फेरी करता सब्जीवाले का फटा कुर्ता
और पॉकेट पर चंद बस का भाड़ा रख
बाकी बेटे के एंड्रोइड के लिए रखने वाला नौकरीसुदा
चाह सिर्फ एक- संतान की खुशी।
यह बदलती मांग कहता है-
यह आधुनिकता है।
अब सबकुछ हैं नया- नया, सबकुछ हैं अलग- अलग;
एसिड से जली निर्दोष लड़की की जलती आँखें
और परीक्षा में सहेली से एक अंक से पिछड़ी लड़की की जलती आँखें
एक ही भावना बयां करती हैं- बदला।
इंसान की बदलती धारणा कहती हैं-
यह आधुनिकता हैं।
अब सबकुछ हैं नया- नया, सबकुछ हैं अलग- अलग;
धर्म के अंधविश्वास मे जकड़ा आतंकवादी
और भूत के कहानी से डरा बालक की सहमी आँखें
एक ही कहानी सुनाती हैं- डर।
परिवेश का बदलता स्वरूप कहता हैं-
यह आधुनिकता हैं।
सब प्राचीन अब हैं नया, सब स्वरूप हैं बदला
सामाजिक ‘अमेल’ और सांस्कृतिक ‘बदलाव’ ने इस देश को
वाकई ‘अमानविक’ बना दिया,
माफ करें आधुनिक बना दिया।

वयस्क चर्चा

श्री नबीन कुमार मण्डल,लिपिक

चतुराश्रम की प्रथा अब समाप्त हो चुकी है। तपोवन या एकांत शिक्षा का प्रचलन लगभग न के बराबर हैं। वानप्रस्थ जाने की इच्छा रखने वाले बुज़ूर्ग को भी सुयोग मिलना असंभव हैं। इसलिए आजकल के बुजुर्गों को कभी- कभी मन मारकर भी संसार धर्म का पालन करते हुए अपने परिवार के साथ बने रहना पड़ता हैं। इस पर चिकित्साशास्त्र के अपरिसीम उन्नति ने इंसान के औसतन आयु को बड़ा दिया है। बस, और क्या मर्त्यलोक से स्वर्गलोक की दूरी बढ़ने का कारण भी बस चिकित्सा विज्ञान की उन्नति ही हैं। और इसलिए अधिकांश लोगो को लगता है कि परलोक की दूरी ज़्यादा हो गया हैं।

एक कहावत है , 'अधिक जीना जर्जर जीना ' जो वाकई अपने आप में सही है । इसलिए आधिकतर देखा जाता है कि जीवनदायिनी औषधि भले ही आयु को बड़ा दे पर उम्र के तकाज़े को नहीं मिटा सकती जो प्रकृति के नियम से आता ही है अर्थात उम्र के साथ- साथ शरीर जीर्ण तो होता ही है।

सबल शरीर जैसे सक्रियता का प्रतीक है उसी प्रकार दुर्बल शरीर निष्क्रियता का। उम्र के साथ शरीर की क्रियाशीलता कम होती जाती है। चिंताशक्ति, याददाश्त में सामंजस्य नहीं रह जाता है। एकाग्रता तो न के बराबर हो जाता है। सोचने की शक्ति कम से कमतर होने लगती हैं। यह सब कमी वार्धक्य का ही अंग हैं।

इसके साथ-साथ घर के सभी सदस्यों की व्यस्तता बुजूर्गों को बहुत खलती है उन्हे हमेशा लगता है कि उनके लिए किसी के पास भी समय नहीं हैं। और यहीं सोच उन्हें रात-दिन आहत करता हैं। एक टीस सा दिल को कचोटता रहता हैं। अपने हाथ से गढ़ा हुआ संसार जैसे अपना नहीं रह जाता हैं। उन्हें लगता हैं जैसे उनकी हैंसियत कोने में पड़े अनावश्यक किसी फ़र्निचर सा है। बीमारी से ग्रस्त शरीर अप्रासंगिक सा लगने लगता हैं। जो बीमारी के साथ- साथ मानसिक विषाद का जन्म देती है।

यहीं से जन्म लेती हैं एकाकीपन जिससे लोग सीपिओं जैसे अपने में रहने लगते हैं। और ऐसी स्थिति में मस्तिष्क विकार शुरू होती हैं।

हमारे चारों ओर ऐसे कई बुजुर्गों को हम देखते हैं जो दूसरों की तुलना में ज्यादा थके और परेशान दिखते हैं। बोलचाल में भी वे अपने हमउम्र की तुलना में अधिक असंगत बातें करते हैं।

असल में सेवानिवृति के बाद बीमारी, एकांकीपन, कर्मक्षमता में कमी और दैनंदिक व्यस्तता का ह्रास इंसान को कमज़ोर बना देता हैं।

इस परिस्थिति से उभरने के लिए वैज्ञानिक रूप से वार्धक्य चर्चा एक प्रासंगिक विषय है। जो वास्तव में फलदायी भी हैं। बुढ़ापे में मानसिक, शारीरिक और पारिवारिक समस्याओं से उभरने के लिए चिकित्सा विज्ञान एक नया समाधान लेकर सामने आए हैं। जो हर उम्र के लोगो के लिए कार्यकारी हैं। यह है एक प्रकार का 'मस्तिष्क का व्यायाम'।

वास्तव में मस्तिष्क की कार्यक्षमता की कमी से उभरने के लिए एक संतुलन बनाने की आवश्यकता होती है। इस बात को जानना जरूरी है कि इंसान की कमज़ोर कड़ी क्या है। और उस क्षेत्र के प्रति संवेदनशील रहकर मानसिक और शारीरिक व्यायाम करवाया जाना है। इसमे परिवार के सदस्यों की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है।

मुझे यह भी कहना है कि स्वस्थ इंसान को भी अवसर काल में मन मस्तिष्क को सचल और स्वस्थ रखने के लिए ब्रेन टीसर जैसे व्यायाम करना चाहिए जिससे डिस्लेप्सिया ,एमनेसिया, अल्जाइमर जैसे बीमारी होने कि संभावना कम हो जाती है। जिसे अधिकांश लोग सठियाने का नाम देकर शांत हो जाते है। तो मैं कहना चाहूँगा कि अपने दायित्व से दूर न भागे और घर के बुज़ुर्गों को एक स्वस्थ सुंदर जीवन दे।

धन से बढ़कर स्वास्थ्य

आशीष मोहन सिंह , वरिष्ठ अनुवादक

जैसा कि हम सभी, आज तक के सबसे तेज, भीड़ वाले और व्यस्त समय में रह रहे हैं। हमें धन कमाने के लिए पूरे दिनभर में बहुत से कार्यों को करना पड़ता है हालांकि, हम यह भूल जाते हैं कि, अच्छा स्वास्थ्य हमारे स्वस्थ जीवन के लिए पानी और हवा की तरह ही आवश्यक है। हम समय पर पर्याप्त भोजन लेना, व्यायाम करना, पर्याप्त आराम करना आदि झूठा धन कमाने के चक्कर में भूल जाते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि, हमारे जीवन में वास्तविक धन हमारा स्वास्थ्य है। सभी के लिए यह सत्य हैं कि, "स्वास्थ्य ही धन है"।

एक अच्छा स्वास्थ्य तनाव को कम करता है और बिना किसी परेशानी के स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देता है। हमें हमेशा अपने स्वास्थ्य के बारे में जागरुक रहना चाहिए और नियमित स्वास्थ्य जाँच करानी चाहिए। हमें अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए ताजे फलों, सलाद, हरी सब्जियाँ, दूध, अंडे, दही आदि को रखने वाला सन्तुलित भोजन समय पर करना चाहिए। एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुछ शारीरिक गतिविधियों, पर्याप्त आराम, स्वच्छता, स्वस्थ वातावरण, ताजी हवा और पानी, व्यक्तिगत स्वच्छता आदि की भी आवश्यकता होती है। अस्पतालों के सामने से भीड़ को कम करने के लिए अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना अच्छी आदत है। अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना अच्छी आदत है, जिसका माता-पिता की मदद से बचपन से ही अभ्यास करना चाहिए।

पहले के दिनों में, जीवन इतना अधिक व्यस्त नहीं था। जीवन बहुत सरल था और इन दिनों की तुलना में स्वस्थ वातावरण के साथ कई चुनौतियों से मुक्त था। लोग स्वस्थ थे क्योंकि, वे अपने दैनिक जीवन के सभी कार्यों को स्वंय अपने हाथों और शरीर से करते थे। लेकिन आज, तकनीकी संसार में जीवन बहुत सरल और आरामदायक होने के साथ ही प्रतियोगिता के कारण व्यस्त हो गया है। आजकल, आसान जीवन संभव नहीं है क्योंकि, सभी दूसरों से बेहतर जीवन जीने के लिए अधिक धन कमाना चाहते हैं। आजकल, जीवन मँहगा और कठिन होने के साथ ही अस्वस्थ हो गया है क्योंकि, सभी वस्तुएँ; जैसे- हवा, पानी, पर्यावरण, भोजन आदि दूषित, संक्रमित और प्रदूषित हो गई हैं।

आमतौर पर, लोग अपनी आलसी और निष्क्रिय आदतों के कारण अपने जीवन में एक अच्छा स्वास्थ्य बनाने में असफल हो जाते है। वे सोचते हैं कि, जो कुछ भी वे कर रहे हैं वह सब सही है, लेकिन जब तक वे अपनी गलती समझ पाते हैं, उस से पहले ही समय निकल चुका होता है। एक अच्छा स्वास्थ्य वह होता है, जो हमें सभी पहलुओं में स्वस्थ रखता है; जैसे- मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक। एक अच्छा स्वास्थ्य हमें सभी बीमारियों और रोगों से मुक्ति प्रदान करता है। एक अच्छा स्वास्थ्य मानसिक, शारीरिक और सामाजिक भलाई की भावना है। यह जीवन का अमूल्य तौहफा है और उद्देश्य पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है।

लोगों को बिना किसी शारीरिक गतिविधि के कार्यालयों में कम से कम 9 से 10 घंटे, कुर्सी पर बैठकर कार्य करना पड़ता है। वे घर में देर शाम या रात को आते हैं और घर के किसी भी कार्य या व्यायाम को करने के लिए बहुत अधिक थके हुए होते हैं। फिर से अगली सुबह वे देर से उठते हैं और कुछ आवश्यक कार्यों, जैसे- ब्रश करना, नहाना, नाश्ता करना आदि करते हैं और अपने ऑफिस चले जाते हैं। इस तरह, वे अपनी दैनिक दिनचर्या को केवल धन कमाने के लिए जीते हैं, न कि अपने स्वंय के जीवन के लिए। अपने दैनिक जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन कमाना बहुत आवश्यक है हालांकि, एक स्वस्थ और शान्तिपूर्ण जीवन जीना भी आवश्यक है, जिसके लिए अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता है।

भारत जैसे आतंकवादियों का खेल का मैदान

प्रियांका बसाक, सुपुत्री- शंकर बसाक, व.ले.प.

आतंकवाद एक विशेष समूह के लोगो द्वारा किए गए अनैतिक एवं हिंसात्मक कार्य का दूसरा नाम है जिसे आतंकवादी कहा जाता है। आतंकवादी गुट का कोई एक मुखिया होता है जिसके इशारों पर उस गुट के बाकी सदस्य काम करते हैं। मुखिए के सख्त आदेश पर बाकी सदस्य किसी भी प्रकार का अनैतिक कार्यों को हर हाल में अंजाम देते हैं। धन, संपत्ति, क्षमता प्राप्त करना और अपने शक्ति का प्रचार उनका मूल उद्देश्य है। उनकी उद्देश्यपूर्ति में संचार माध्यम विशेष भूमिका निभाती हैं। आतंकवाद विषयक समाचार दूरदर्शन, समाचार पत्रों आदि में आते हैं और उनकी उद्देश्य पूर्ण हो जाती है। बीच- बीच में आतंकवादी गुट मीडिया के माध्यम से अपनी योजनाओं, विचारों के बारे सरकार तक समाचार भेजते है। विभिन्न आतंकवादी गुटो का का नाम उनके द्वारा प्रयोग में लाये गए विभिन्न अस्त्र- शस्त्र के आधार पर होता है। आतंकवाद इंसान के मन में ऐसा डर फैलता है कि लोग अपने- अपने घरों से भी निकलने में कतराने लगते हैं। आतंकवादी अपने आतंकवाद का निशाना मंदिर, बाज़ार, स्कूल ,कॉलेज यहाँ तक की अस्पताल को भी बनाते हैं। आतंकवादियों का मूल लक्ष्य भीड़ वाले इलाके में अपना आक्रमण करना होता है जिससे अधिक से आधिक धन प्राण का नुकसान हो।

आतंकवादियों के हमले के विषय में आए दिन समाचार आते रहते हैं लेकिन 11/09/2001 का अमेरीका का आक्रमण और 26/11/2008 से 29/11/2008 तक का भारत आक्रमण सम्पूर्ण विश्व के वित्तीय स्थिति एवं मानवता को हिलाकर रख दिया। अमरीकी दूतावास में बॉम्ब गिराना आदि आतंक फैलाने का एक उदाहरण हैं। कभी- कभी आतंकवादी धर्म के दुहाई पर आतंक फैलते है। पहले आतंकवाद एक विशेष स्थान तक सीमित था जैसे जम्मू- कश्मीर। लेकिन अब विश्व का कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं हैं। कुछ साल पहले मुंबई के ताज होटल एवं नरीमन हाउस में आतंकवादी हमले के परिणामस्वरूप अनेक प्राणों को गवाना पड़ा वित्तीय हानि तो हुआ ही यद्यपि लगता है कि आतंकवाद का जड़ इसलिए मजबूत होता जा रहा हैं क्योंकि कुछ धनी वर्ग के लोग अपने निजी स्वार्थ को पूरा करने के लिए आतंकवादियों का साथ देने से हिचकिचाते नहीं। यह समाज के लिए एक बीमारी है जो दिन प्रतिदिन वाइरस के तरह फैलता जा रहा है। इसको जड़ से मिटाने के लिए कोई ऐसा निदान निकालना है जो फलदायी हो। एक भारतीय होने के नाते हम सबको हाथ से हाथ मिलाकर इस कर्मयज्ञ में हिस्सा लेना है और हर एक इंसान को बीमार मानसिकता के इन लोगों के लालच के चंगुल में फँसने से रोकना है।

आतंकवादी गूट अपने आतंकवादी हमलो के द्वारा कई देशो के सरकार पर परोक्ष रूप से दबाव देते हैं। कुछ शत्रु देश आतंकवाद का नाजायज फायदा उठाते हुए इन आतंकियों को सस्ते में मरणास्त्र उपलब्ध कराते हैं। ऐसे विरोधी देश सम्पूर्ण विश्व के आतंकवादियों को आक्रमण के

लिए उकसाते है। उन्हे प्रशिक्षण दिलवाते हैं। आजकल बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण हमारा देश मानो आतंकवादियों के लिए खेल का मैदान बन गया हैं। कभी-कभी जब वे सेना के हाथ लगते हैं तो बेरहमी से मारे जाते हैं फिर भी वे कुछ भी करने के लिए तैयार रहते है। दक्षिण कश्मीर के राज्य विधानसभा में आतंकवादियों द्वारा रखे गए बिस्फोटक तो कभी अमरनाथ के तीर्थयात्रियों पर ए.के 47 से हमला जैसे घटनाओं से आतंकवादियों के बढ़ते शक्ति का पता चलता हैं। समाज तो शिक्षित करने और कुसंस्कार को दूर करने से ही शायद नए प्रजन्म का विकास होगा और इसी से आतंकवाद रूपी कोहरा दूर होगा।

क्या हम कमजोर हैं ?

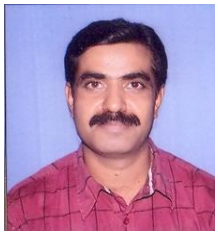

सुनील कुमार, स.ले.प.अ.

हिम्मत किसे कहते हैं ? क्या आपने कभी सोचा है कि आपमें हिम्मत है या नहीं ? शायद जरूरत नही पड़ी। पर हाँ, आज मैं आपको मजबूर करता हूँ यह सोचने के लिए कि क्या आप हिम्मत वाले है ? अगर आप का जवाब 'हाँ' है तो इसका मतलब कि आप झूठ नहीं बोलते हैं और अगर 'ना' है तो आप सच बोलकर उसके परिणाम से डरते हैं। इसीलिए सच नहीं कहना चाहते हैं। मतलब आप में हिम्मत नही है – और यही सच है हम सब के लिए।

कल एक हादसा हो गया। कुछ लड़के मिलकर एक लड़की को छेड़ रहे थे। लोग देखकर चले जा रहे थे या खड़े होकर देख रहे थे। कोई कुछ नही बोल रहा था , जब पुलिस आकार पूछताछ करने लगी तो किसी ने कुछ नही कहा क्योंकि उन लड़कों में से एक लड़का वहाँ के नेता का बेटा था। सभी चुपचाप रहे मानो उस जगह कोई था हीं नहीं। क्या हम कमजोर हैं ?

रास्ते पर हुई दुर्घटना के कारण अगर कोई पड़ा रहता है तो कोई सहायता करने के लिए आगे नहीं आता है- कारण- कौन झमेले में पड़े। क्या यह सोच सही है? कहीं हम कमजोर तो नहीं?

अब आते हैं अपने बारे में – मैं अपने कार्यालय का एक वरिष्ठ अधिकारी हूँ। निरीक्षण हेतु कभी – कभी बाहर भी जाना पड़ता है। मेरा एक कनिष्ठ अधिकारी है जो बड़ा हीं स्वाभिमानी एवं सच्चा है। जैसा चलता है हर कार्यालय में 20 दिन का निरीक्षण हो तो लोग 15 दिन ही जाया करते थे। हमारा निरीक्षण दल भी यही काम करता था लेकिन जब से यह कनिष्ठ अधिकारी हमारे दल में आया है, हमारे लिए मुसीबत खड़ी हो गयी है। यह 20 के 20 दिन हीं निरीक्षण करना चाहता था। एक दिन का घपला भी उसे पसंद नही था। एक बार दस दिन के निरीक्षण में मैं पाँच दिन हीं जा पाया था, निरीक्षण दल के बाकी सदस्य भी 6 या 7 दिन ही गए थे, पर मेरा वह कनिष्ठ अधिकारी पूरे 10 के 10 दिन गया था। वापस आने के बाद उसने प्रबंधन को सारी बात बता दी। आपको क्या लगता है – प्रबंधन को इसकी कोई जानकारी नही होती ? आप गलत सोच रहे हैं- सभी को इसके बारे में खबर होती है। पर कोई भी कार्रवाई से डरता है। अंजाम यह हुआ कि उस निरीक्षण दल के सदस्य से पूछताछ करने के बजाय उस कनिष्ठ अधिकारी पर हीं गाज गिरी। उससे पूछा जाने लगा कि तुमने अभी तक कितने निरीक्षण किए हैं? कितने बजे कार्यालय आते हो और कितने बजे कार्यालय से जाते हो? निजी काम मैं कितना वक़्त गुजारते हो इत्यादि। किस पर कार्रवाई होनी थी और किस पर होने लगी – तो जरा सोचिए क्या हम कमजोर हैं? हमारे कार्यालय का समय सुबह 10:00 बजे से शाम 06:30 तक का है। चपरासी को 09:30 बजे और बाकी सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को 10:00 बजे कार्यालय आना होता है। पर

कर्मचारी एवं अधिकारी 11:00 बजे से पहले नही आते हैं और शाम को 05:00 बजे हीं कार्यालय से चले जाते हैं। कुछ चपरासी एवं कर्मचारियों ने इस कनिष्ठ अधिकारी से पंगा ले लिया। कुछ चपरासी एवं कर्मचारियों के नाम पर ज्ञापन जारी किया। मैंने उसे बहुत समझाया कि इस चक्कर में बेकार की लेखा-लिखी करनी पड़ेगी जैसा चलता है चलने दें (क्योंकि हम कमजोर हैं) पर वह नही माना। नतीजा यह हुआ कि उस कनिष्ठ अधिकारी के ऊपर जांच समिति बैठ गयी और कार्रवाई शुरू हो गयी। वह कब आता है, कब जाता है, क्या करता है इत्यादि क्योंकि इससे कुछ लोगों पर असर होनी थी। सभी कहने लगे कि यह कनिष्ठ अधिकारी अपने आपको कुछ ज्यादा हीं ईमानदार दिखाता है, स्वयं जब देर से आता है या जल्दी जाता है तब कुछ नही बोलता। मैं ठहरा वरिष्ठ अधिकारी मुझे तो अनुभाग और कार्यालय दोनों हीं चलाना था, चूंकि मेरा वह कनिष्ठ अधिकारी अपने कर्तव्य के प्रति बहुत सजग एवं निष्ठावान है इसीलिए मैंने जैसे-तैसे इस मामले को रफा-दफा कर दिया। क्या मैं कमजोर हूँ? पर बात छुपती कहाँ हैं – प्रबंधन को इस बात का पता लग गया। हमारे कार्यालय से दूर के दो कार्यालयों में उपस्थिती निगरानी हेतु बायोमेट्रिक लगवा दिया गया और हमारे कार्यालय में एक आदेश हुआ कि कार्यालय के समस्त कर्मचारी एवं अधिकारीगण रोज सुबह 10:45 के तक कार्यालय में उपस्थित हो। यहाँ तक तो बात फिर भी ठीक थी। पर एकदिन तो हद हीं हो गयी, पता नहीं कैसे उसे उपस्थिती पंजी की एक प्रति मिली जिसमें 12 अप्रैल को 2 अधिकारी एवं 3 कार्मिक अनुपस्थित थे। लें जब मई में उस उपस्थिती पंजी को दुबारा देखा गया तो उस तिथि (12 अप्रैल) को सभी हस्ताक्षर मौजूद थे। मेरे कनिष्ठ अधिकारी ने मुझे इस बात से अवगत कराया, अब तो मैं भी दंग रह गया कि आखिर उसे 12 अप्रैल का बिना हस्ताक्षर वाले उपस्थिती पंजी की प्रति कहाँ से मिली। जब मैंने यह बात अपने दूसरे सहकर्मियों एवं अपने वरिष्ठ अधिकारी को यह बात बताई तो सबका यही कहना था कि इसकी जांच की जाये कि आखिर उस कनिष्ठ अधिकारी को बिना हस्ताक्षर वाले उपस्थिती पंजी (12 अप्रैल) की प्रति उसे कैसे मिली। लेकिन किसी ने भी अनुपस्थित होकर बाद में हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी एवं कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कोई बात नही उठाई। कई ने तो यह भी कहा कि मामले को यहीं दबा दिया जाये और प्रबंधन तक बात को ना घसीटा जाये। एक बार फिर "क्या हम कमजोर हैं ?" क्या हम गलत को गलत बोलने का साहस नही रखते हैं? कुछ सालों से अगर कुछ गलत चल रहा है तो क्या हम उसे रोक नहीं सकते ? अगर कोई बिना कारण 10:00 की जगह 1:00 बजे आए और 06:00 के जगह 05:00 बजे चला जाये वह भी बिना बताए, तो क्या हमें चुप रहना चाहिए? क्या कोई अनुपस्थित रहकर दूसरे दिन चोरी से हस्ताक्षर कर दे तो हमें क्या कुछ नही कहना चाहिए ? क्या ऐसा करने से काम का नुकसान नही होगा। पता नही। मैंने तो अपने 30 वर्ष के करियर में ऐसा ही होते देखा है, पर आज इस कनिष्ठ अधिकारी ने मेरी आँखें खोल दी। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ – मुझे लगा कि शायद मैं कमजोर हूँ। मैं मान गया कि वाकई मैं कमजोर हूँ।

पर्यावरण - धर्म और विज्ञान

अमित, कनिष्ठ अनुवादक

पर्यावरण – मानव जीवन का एक मात्र आधार, पृथ्वी पर मानव जीवन का अस्तित्व का कारण पर्यावरण की उपस्थिति हीं है। पर्यावरण के बिना पृथ्वी की कल्पना की दूर – दूर तक कोई संभावना नही है। पृथ्वी पर उपस्थित पर्यावरण के विभिन्न घटक पेड़ – पौधे, वायु – मौसम, पशु – पक्षी जीवन चक्र का एक अनोखा उदाहरण है। हम पर्यावरण को जितना सहेजेंगे, जितना सम्मान देंगे, जितनी उसकी पूजा करेंगे हमारा जीवन उतना हीं अनुकूल, उत्कृष्ट एवं सुखमयी होगा।

हमारे परिवार या घरों की वृद्धाओं द्वारा तुलसी के पौधे की नित्य पूजा करना, नियमित रूप से उसमें जल देना, उसकी आरती करना ..... आदि, इसी तरह अनेकानेक सुहागन नारियाँ अपने वैवाहिक व दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने हेतू वट-वृक्ष की पूजा करती हैं, हजारों-लाखों नर-नारी दूध-दही चढ़ाकर गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों की पूजा करते हैं, इन्हें माँ का दर्जा देते हैं। प्रेतआत्माओं के दुष्प्रभाव से निवारण हेतू घर के द्वार पर पीपल वृक्ष को लगाते है और इसे अति शुभ माना जाता है।

उक्त आचरणों को कुछ बुद्धिजीवी आज्ञानता की संज्ञा देते है लेकिन यह सुनश्चित है कि इसके द्वारा प्रकृति और हमारे बीच परस्पर सहजीवन की भावना सशक्त हो उठती है। वृक्षों, पेड़-पौधों, नदियों के आदरपूर्ण सम्बोधन की भर्त्सना उपहास्यपद सी प्रतीत होती है – जड़-पदार्थों के साथ कैसी आत्मीयता और क्यों।

यदि हम आन्सटाईन जैसे महान वैज्ञानिक के सापेक्षतावाद के सिद्धान्त पर गहन अध्ययन करें तो यह ज्ञात होगा कि प्रत्येक पदार्थों में ऊर्जा का संघात है और उसमे जीवंतता के अंश विद्दमान है। परमाणु विघटन ने यह प्रमाणित कर दिया है कि परमाणु में भी चेतना होती है एवं वाह्य संवेदनाओं के प्रति वह प्रतिक्रिया देने में भी सक्षम है। अतः जड़ पदार्थों के लिए आत्मीयता की भावना सदैव हीं वैज्ञानिक है और प्रकृति एवं हमारे बीच एक अखंड संबंधों का सुदृढ़ आयाम है। वैंदिक धर्म की महानता का कारण विश्व के हर कण में प्रकृति की चेतनायुक्त रूप को स्वीकारना है। प्रकृति के साथ प्रेम और सद्भावनापूर्ण जीवन व्यतीत करना हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। प्रकृति और मानव के बीच एक अक्षुण्ण रिश्ता है। पर्यावरण के प्रति सचेतता भले हीं कुछ लोगों के लिए अनावश्यक मुद्दा है लेकिन हम भारतवासी युगों-युगों से प्रकृति की वंदना करते आए हैं। भले हीं हम भारतीय केवल औपचारिकता के आधार पर कपूर, अगडबत्ती, धूप जलाते हैं, दीपदान करते हैं लेकिन इन्हीं सब से हमारा वातावरण कम से कम सुगंधित एवं शुद्ध तो बनता है। यह सभी प्रक्रियाएं पर्यावरण को दूषित होने से बचाने में अहम

योगदान देती हैं। ऐसे पुण्यकार्य द्वारा मनुष्य पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन तो करता हीं है साथ हीं ऐसा करने से अहंकार रूपी अंकुर भी नष्ट हो जाता है। वेदों में प्रकृति के महान एवं जीवनप्रदायिनी शक्तियों की विशेषताओं का कंठमुक्त गुणगान किया गया है। घर के अंदर तुलसी और घर के बाहर नीम, पीपल इत्यादि का वृक्ष हमारे सांस्कृतिक जीवन का अलंकार माना जाता है। प्रकृति हमारे लिए उस माँ के सामान है जिसकी गोद में हम खेल कर आज बड़े हुए हैं।

हमारे ऋषिमुनियों ने अपने रचनात्मक मंत्र से हमारे और पर्यावरण के बीच एक ऐसी मजबूत रिश्ते की स्थापना की है कि हम चाहकर भी स्वयं को उससे मुक्त नहीं कर सकते। हमारे पर्यावरण में बहुत से ऐसे पौधे हैं जिनका औषधीय गुण अतुल्य है जैसे - आंवला, तुलसी, नीम इत्यादि इनके वैज्ञानिक महत्वों को हमारे पूर्वजों ने बहुत पहले हीं परख लिया था।

पर्यावरण की रक्षा हमारे जीवन का एक मूल उद्देश्य होना चाहिये, लेकिन अब प्रत्येक क्षेत्र में लाभ-हानि के ब्यौरे पर तुलनामत्मक रूप से अत्यधिक ध्यान दिया जाने लगा है।

हमारी नदियाँ कल-कारखानों की तलछट द्वारा प्रदूषित हो चुकी है, यही नही गंगा के स्रोत गंगोत्री को प्रसिद्ध सैलानी-स्थल बनाने के साथ हीं साथ वह स्थान गंगा के प्रदूषण का मुख्य केंद्र बन चुका है। अर्थात वहाँ सैलानियों द्वारा इस्तेमाल किगे गए पोलिथीन के थैले, जले हुए ईधन के अवशेष इत्यादि कचड़ा गंगोत्री को बुरी तरह से प्रदूषित कर रहें है और भारी मात्रा में क्षति पहुंचाने की ओर सम्मुख हो चुकी हैं। यदि हम अपने अतीत की धर्म-भावना को अपने वर्तमान का मार्गदर्शक का दर्जा देते तो आज हम अपने स्वार्थ-सिद्धि के लिए अपने पर्यावरण का गलत इस्तेमाल न करते और अपनी जीवन-शैली को प्रदूषित करने का भी दुस्साहस न करते। यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि राजनीति-केन्द्रित चिंतन-पद्धति ने समूचे धर्म की परिभाषा को हीं बदल डाली है। धर्म का पर्याय अब निर्माणकारी और कल्याणकारी तत्व नहीं बल्कि घातक मजहबी, पंथ इत्यादी के कटघरे हैं। यदि कोई हमारे अंदर इस भावना का संचार करा दे कि पर्यावरण की रक्षा हीं इस धरती पर जीवन को बचाए रखने का एकमात्र ईश्वरीय वरदान है और मानव-धर्म का अक्षुण्ण हिस्सा है, तब कहीं जाकर हमारे चित्त में पर्यावरण के प्रति उदार और आत्मीय भावना का जन्म हो सकता है। धर्म का अर्थ उस शक्ति से है जो कर्तव्य पालन हेतू एक सुदृढ़ और निश्चित दिशा कि ओर इंगित करता है एवं मानव को उसके कर्तव्य-पथ पर बनाए रखता है। किसी नेता के नेतृत्व में हमने अपनी वन-संपदा की रक्षा का अभियान शुरू किया था क्योंकि ऐसा जीवन व्यतीत करना हमारी संस्कृति में हीं है।

हम वन-संपदा के अलावे पशु-पक्षियों के प्रति भी सचेत और उदार रहने के हेतू विवश थे, क्योंकि हिन्दू धर्म में सर्वाधिक अवतार पशु रूप में हीं लिए गए हैं चाहे फिर वह गाय, सर्प, हंस, वृषभ, गरुण आदि हीं क्यों न हो। इन सभी को हिन्दू समाज में पूजनीय दर्जा दिया गया है। वर्तमान समय में पशु-पक्षी की जगत व पर्यावरण की रक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के प्रचार-प्रसार किए जा रहें हैं।

सुनामी, भूकंप, अतिवृष्टि और कुछ नहीं बल्कि पर्यावरण के साथ किए गए अपमान का अभिशाप है। हर अभिशाप और दण्ड के साथ हम एक अवसर भी प्रदान किया जाता है कि मनुष्य अपने पर्यावरण की वैज्ञानिक महत्व को समझे और उसका आदर व सम्मान करे। हमें यह याद रखना चाहिए कि पर्यावरण का अस्तित्व से हीं पृथ्वी का अस्तित्व है।

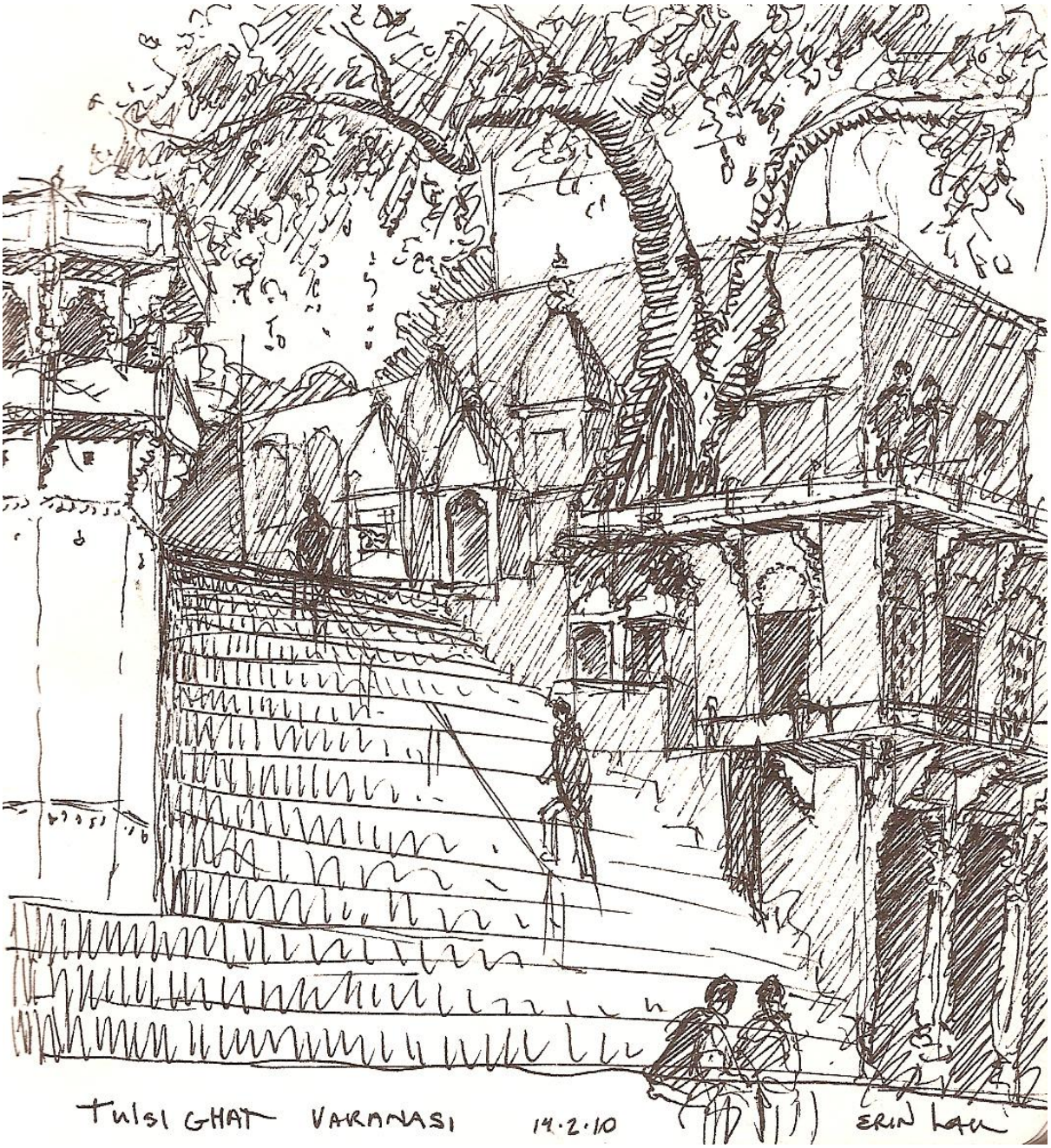

दान एवं दया का महत्व

मंसाराम गोंड, एम. टी. एस.

एक समय की बात है, दशरथ नाम का एक बनिया था, अपने जीवन की शुरुआत से ही वह जुआ खेलता एवं शराब पीता। ऐसे में वह बहुत ही अमीर था। घर-द्वार जगह-जायदाद उसके पास काफी था, वह जुआ तो खेलता था लेकिन कभी जीत नही पाता था। जुए और शराब की लत के कारण उसे अपनी काफी जमीन – जायदाद बेचनी पड़ी। वह मन ही मन यह सोचता था कि जिस दिन वह जुए में जीत जाएगा उस दिन वह जुआ खेलना छोड़ देगा। ईश्वर के कृपा से एक दिन ऐसा ही हुआ, उस दिन बहुत सा खजाना, रुपया पैसा जीत लिया फिर वह मन ही मन बहुत खुश हुआ। शाम को वह मस्ती भरे गाने गाते हुए अपने घर जा रहा था। उसी रास्ते में एक बुढ़िया बैठकर रो रही थी। दशरथ बनिया कि नजर उस बुढ़िया पर पड़ी और उसने बुढ़िया से रोने की वजह पुछी, बुढ़िया ने जवाब दिया कि मेरा एक ही लड़का है, उसके सिवाय मेरा इस दुनिया में कोई नही है और उसकी शादी के लिए उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नही है। दशरथ बनिया शराबी और जुआरी तो था हीं लेकिन दयालू भी था, दशरथ को उस पर दया आयी। उसने बुढ़िया से बोला - माँ जीवन में एक बार ही जुआ जीत कर घर में धन-दौलत लेकर जा रहा था लेकिन पैसे की जरूरत हमसे ज्यादा आपको है। दशरथ बनिया ने सारा जीता हुआ धन उस बुढ़िया को दान में दे दिया, बुढ़िया खुशी से रोते हुए अपने घर की ओर चली गयी और अपने बेटे की शादी करवाई। इसके साथ ही दशरथ बनिया ने जुआ खेलना शराब पीना इत्यादि सारी बुड़ी आदतें छोड़ दी। कुछ समय बाद दशरथ बनिया का देहांत हो गया और वह परलोक सिधार गया। वहाँ यमराज के पास उसके सारे कर्मों का लेखा-जोखा हुआ और यमराज ने उससे कहा कि उसे अपने सारे पापों की सजा यही नरक में ही भुगतनी होगी लेकिन जैसा कि उसने एक जरूरतमंद बुढ़िया की मदद की है इसीलिए उसे केवल तीन घंटे के लिए स्वर्ग में रहने का अवसर मिलेगा और फिर यमराज ने बनिए से उसकी इच्छा पुछी कि वह स्वर्ग का सुख भोगना कब पसंद करेगा। यमराज के इस प्रस्ताव पर विचार करते हुए बनिए मन ही मन सोचा और यह निर्णय लेते हुए यमराज से आग्रह किया कि वह पहले स्वर्ग का सुख भोगना चाहता है तत्पश्चात यमराज ने उसे तीन घंटे के लिए स्वर्ग का राजा बना दिया, जब बनिया स्वर्ग पहुंचा तो उसने देखा कि स्वर्ग खजाने से भरा पड़ा है। बनिया मन ही मन सोचने लगा कि यदि केवल छोटे से दान का परिणाम तीन घंटे का स्वर्ग है तो इस खजाने के दान से तो ..... । यही सोचकर बनिए ने स्वर्ग का सब खजाना दान स्वरूप बांटने लगा। यह देखकर समस्त देवी - देवता घबड़ाने लगे कि इस प्रकार तो स्वर्ग का समस्त खजाना खाली हो जाएगा। इसके बाद सभी देवता माँ सरस्वती के पास गए और उनसे निवेदन करने के लिए बनिए कि बुद्धि भ्रष्ट करें जिससे कि वो खजाना लुटाना बंद करे वरना स्वर्ग का सम्पूर्ण खजाना खाली हो जाएगा। तीन घंटे मे से दो घंटे बीत जाने के पश्चात माँ सरस्वती उस बनिए के कंठ पर बैठ गयी। इसके बाद बनिया पूरे एक घंटे

के लिए चुप होकर बैठा गया यूँ कहें तो उसका मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया, ज्योही बनिए के स्वर्गवास के तीन घंटे पूरे हुए, उसे होश आया और उसने यमराज से कहा – हे प्रभु मेरी मनोकामना पूर्ण हुई अब आप मुझे नरक की ओर ले चलें। बनिए के वाक्य समाप्त होने से पूर्व ही भगवान विष्णु वहाँ प्रकट हुए और कहा कि तुम्हें अब नरक जाने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि तुमने वर्षों से बेकार पड़े इस खजाने को जरूरतमंदों के बीच बाँटकर बहुत ही पुण्य का काम किया है और तुम्हें एक बार फिर इंसान के रूप में धरती पर वापस भेजा जाता है जहाँ तुम एक ऐसा ही स्वर्ग बना सको। उस बनिए का जन्म बनारस के काशी में पंडित मदन मोहन मालवीय के रूप में हुआ। पंडित मदन मोहन मालवीय ने समाज के कल्याण हेतु बहुत से कार्य किए । उन्होनें मानव कल्याण को ही अपने जीवन का लक्ष्य मान लिया एवं उसके लिए वह सदैव तत्पर रहते थे। राम नगर के राजा पंडित मदन मोहन मालवीय जी से बहुत ही प्रभावित थे एवं उनका बहुत सम्मान करते थे। मालवीय जी को समाज के लिए एक सुदृढ़ एवं मजबूत आयाम की जरूरत महसूस हुयी। इसके लिए उन्होनें राम नगर के राजा से दान स्वरूप कुछ जमीन की मांग की। राजा ने मालवीय जी की बात को मानते हुए उनके सामने प्रस्ताव रखा कि आप नगर कि परिक्रमा करें और अपनी इच्छा एवं सुविधानुसार जहाँ मन वहाँ, जितना मन उतना जमीन ले लीजिये। मालवीय जी ने परिक्रमा शुरू की और बनारस के अंदर एक बड़े भू-भाग का चयन किया और बड़े ही कड़ी मेहनत के बाद वहाँ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम से एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। मालवीय जी विश्वविद्यालय के प्रति इतने समर्पित थे कि वे जहाँ कही भी जाते विश्वविद्यालय के लिए चंदा एकत्र करते रहते थे। इसी उद्देश्य से वह एक दिन लखनऊ के नवाब के पास गए लेकिन नवाब को बहुत गुस्सा आया और उन्होनें मालवीय की तरफ अपना जूता फेंक दिया। मालवीय जी उस जूते को लेकर बनारस चले आए और विश्वविद्यालय के परिसर में बड़े से खंभे में लटका दिया और पोस्टर में यह लिखा कि यह जूता लखनऊ के नवाब का है जिसकी नीलामी होने को है। सबसे ऊंची बोली लगाने वाला इसका स्वामी बनेगा। यह बात किसी तरह लखनऊ के नावाब के पास पहुंची और वह गुस्से से आग-बबूला हो गए। वह उसी वक्त अपने सैनिकों के साथ बनारस की ओर चल पड़े लेकिन वहाँ पहुँचने के बाद वहाँ का सारा नजारा देखने के पश्चात शांत हो गए और मालवीय जी की प्रशंसा करने लगे। नवाब ने फिर दान स्वरूप बहुत सा धन मालवीय जी को दिया और अपना जूता लेकर वहाँ से खुशी–खुशी चले गए।

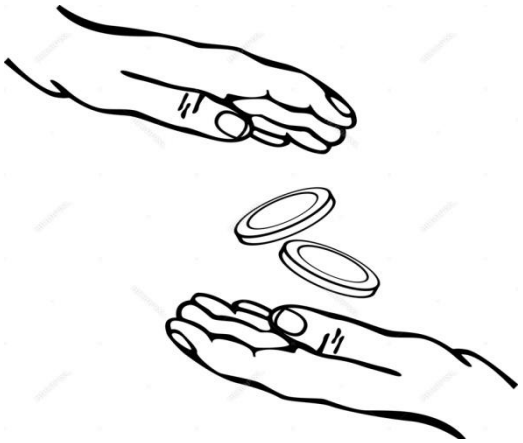

नारी - अनंतता

ओइशी बंदोपाध्याय
सुपुत्री राणजीत बंदोपाध्याय, स.ले.प.अ.

नारी के विषय में बातें करना यानि किसी अनंत शक्ति के विषय में बात करना। कुछ शब्दों में नारी की व्याख्या करना असंभव हैं। सिर्फ उसकी स्तुति कर आप उसे बांध नहीं सकते। आप उसे बदल नहीं सकते क्योंकि वह चिरंतन हैं। उसे तोड़ना आसान नहीं और न ही उसे भेदना आसान हैं। अपने आत्मसम्मान के लिए वह अंत तक लड़ लेती हैं। नारी, शक्ति का प्रतीक हैं। कहाँ जाता हैं हर पुरुष के गुण को निखारने के लिए ईश्वर एक नारी का सृष्टि करते हैं। ईश्वर ने पहले आदम यानि नर की सृष्टि की और बाद में उसका साथ निभाने के लिए नारी की सृष्टि की। नारी जहां तेजस्विनी हैं वहीं वह त्याग की भी प्रतीक हैं। वह आवश्यकता पड़ने पर किसी भी प्रकार के तूफान का सामना कर लेती हैं। अपने जीते जी वह अपनों पर कोई आंच नहीं आने देती और उसके साथ- साथ किसी के सामने अपने अपनों को झुकाती भी नहीं। नारी मातृस्वरूप हैं। लगभग हर नारी में मातृ सत्ता प्रबल होती हैं। नारी आपके जीवन रूपी दिये को प्रज्जवलित रखने में दियासलाई का काम करती हैं। उसकी कोशिश बस यहीं रहती हैं कि आपका दिया हमेशा जलता रहे। मेरे ख्याल से पुरुष का कर्तव्य हैं कि वे हर एक नारी का सम्मान करे, उनके गुणो का कद्र करें और उनके गुणो को अपने जीवन में प्रेरणा के स्रोत के रूप में ले।

आज 21 वी सदी में आकर भी नर नारी को अपने से कम दर्जे का समझते हैं। आज के इस पुरुषतांत्रिक समाज में नर नारी से खूद को श्रेष्ठ समझते हैं और उस पर अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते हैं। कोई- कोई पुरुष तो स्वाधीन रूप से नारी के काम करने या बाहर आने जाने में भी पाबंदी लगते हैं। क्या एक नारी को अपने ही समाज से सम्मान प्राप्य नहीं हैं? क्या एक नारी को अपने मर्ज़ी से आत्मविश्वास एवं गौरव के साथ सर उठाकर नहीं जी सकती? आज समाज कुछ बदलाव चाहती हैं। नारी को जब तक उसका प्राप्य दर्जा नहीं दिया जाएगा या पुरुष का नारी के प्रति दृष्टिकोण नहीं बदलेगा तब तक समाज में बदलाव कैसे आ सकता हैं? सारांश यह है कि, जो काम पुरुष के लिए अनैतिक नहीं वह नारी के लिए भी अनैतिक नहीं हो सकता। अर्थात, अच्छा- बुरा, नैतिक- अनैतिक सब इंसान से जुड़ा होता हैं नारी या पुरुष से नहीं। नारी शक्ति अनंत है सिर्फ आवश्यक्ता है तो उसे पहचानकर निखारने की।

किसी की भी महानता

मंसाराम गोंड, एम. टी. एस.

एक समय की बात है, एक नदी था प्रायः जंगल के अंदर एक जगह उस नदी के ठीक किनारे एक चाँदनी फूल का पौधा था और वही पर उसी नदी में एक पत्थर का चट्टान भी था। नदी के अंदर पानी का बहाव बहुत तेज था। पानी का बहाव उस पत्थर को ऊपर से घसीटते हुए चला जाता था। इस दृश्य को देखकर चाँदनी का फूल मन ही मन बहुत खुश होता था और उस पत्थर की स्थिति का मजा लेते हुए हँसकर बोलता था –"भाई तुम्हारा नसीब भी कितना खराब है की नदी का पानी हर वक़्त तुम्हें घसीटते रहता है।" बेचारा पत्थर रोज उस फूल की बात को सुनकर बड़ा ही दुखी और शर्मिंदा होता। पानी के बहाव द्वरा हुए घर्षण ने उस पत्थर को बहुत ही सुंदर रूप दे दिया। एक दिन कोई वास्तुकार उस नदी किनारे स्नान करने आया था तभी उसकी नजर उस सुंदर से पत्थर पर पड़ी। चूंकि वास्तुकार को वह पत्थर बहुत ही अच्छा लगा इसीलिए वह अपने साथ उस पत्थर को घर ले आया और उसे काटकर एक सुंदर रूप देते हुए शालीग्राम की मूर्ति बना डाली। इसके पश्चात उस वास्तुकार ने उस पत्थर से बने शालीग्राम मूर्ति की स्थापना उसी नदी के किनारे (चाँदनी फूल के पौधे के समीप) की जहां से वह इसे लाया था। उस पत्थर के वहाँ स्थापना के साथ ही साथ वहाँ एक छोटा सा मंदिर भी बन गया जहाँ लोग स्नान के बाद पूजा करना शुरू करने लगे, और पूजा के लिए उसी चाँदनी पौधे से फूलों को तोड़कर उस पत्थर पर अर्पण करने लगे जिसका उपहास प्रायः उस चाँदनी फूल के पौधे द्वारा किया जाता था। अब फूल की इस स्थिति को देख पत्थर को उस पर दया आयी और उसने फूल को समझते हुए कहा –" देख भाई आज तू मेरे चरणों मे पड़ा हुआ है, फिर भी मै यही चाहूँगा की तू सदा खुश रहे। कष्ट सहने या उठाने पर एक समय बाद अच्छा फल मिलता है और हाँ किसी को मुसीबत या कष्ट में देख कर उसका मजाक नही उड़ना नहीं चाहिये न ही उसका आनंद नही लेना चाहिए। इस बात पर चाँदनी फूल को अपने भूल का एहसास हुआ और वह शर्मिंदा हुआ। उसने अपनी इस गलती के लिए उस पत्थर से हाथ जोड़ कर माफी मांगी।

एक नारी की कहानी उसी के जुबानी

संयुक्ता भादुरी, हिन्दी अधिकारी

बचपन से न जाने क्यों अधिकांश बच्चियाँ बड़ी होती हैं शादी का सपना लिए। बेटो को तो पूछा जाता हैं कि वह बड़ा होकर क्या बनना चाहता हैं? घर कि देखभाल करेगा की नहीं फलाना फलाना पर जब बेटी की बारी आती हैं तो लोगो का नज़रिया जैसे बदल जाता है। और अंजाने में यहीं से भेदभाव शुरू हो जाता है। पुरुष बन जाते हैं शासक वर्ग और नारी शोषित वर्ग। मैं नहीं कहती कि हर घर में ऐसा होता हैं पर प्रतिशत की दृष्टि से देखा जाए तो आज भी ऐसा ही हैं। किसी भी लड़की को बचपन से या तो गुड्डा गुड़िया दिया जाता हैं नहीं तो छोटे –छोटे बर्तन आदि। वही से उसका केवल घरेलू देखभाल का आकर्षण तैयार कर दिया जाता हैं। उधर जब बेटे की बारी आती हैं तो उसे कहा जाता हैं कि क्या तू लड़की हैं जो खिलौने से खेलेगा ? यह भेदभाव बच्चों के मन में बड़े होते होते इस तरह घर कर जाता हैं कि वे एक दूसरे के प्रति वैसा ही बर्ताव करने लगते हैं। किसी को शक्तिशाली बनाने के लिए किसी को कमजोर बनाने की जरूरत नहीं पड़ती। समाज कोई जंग का मैदान नहीं हैं न ही कोई अखारा। अगर भेदभाव को भूल केवल एक दूसरे का सम्मान करते हुए इंसान जीवन पथ पर आगे बड़े तो शायद हमारा समाज हर कुरीतियों से मुक्त हो सकता हैं।

आज मैं एक ऐसे ही एक लड़की की कहानी आपको बताना चाहूंगी जो आज के समाज का एक घृणित सच हैं। एक ऐसी लड़की जो एक संयुक्त परिवार में रहती थी जहां उसे लाड़–प्यार बहुत मिलता था पर परंपरावादी परिवार होने के कारण हमेशा उसे शादी के सपने दिखाये जाते थे। गुड्डे-गुड़िया की शादी देना, उनसे खेलना यहीं उसके बचपन का शौक रहा। न जाने कब शौक सपने में तब्दील हो गई। लाल बनारसी, सुंदर-सुंदर गहने और प्यार भरा एक संसार का सपना देखकर वह बड़ी हुई थी। उसके सपने में दुख का नामोनिशान नहीं था। पढ़ी लिखी तो वह थी लेकिन वह भी शिक्षा के लिए उसे शिक्षा नहीं दिया गया था बल्कि ब्याह के पात्रता के लिए। उसे कभी भी यह नहीं कहा गया कि जीवन में उसे कुछ बनना हैं पर हमेशा यह कहा गया कि त्याग ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए , घर में सब पुरुषों के खाने के बाद औरत को खाना चाहिए इत्यादि- इत्यादि। अपने जीवन का वह यहीं ध्येय मानकर चली थी। चलिये सुनते हैं अनु की कहानी उसी के जबानी।

मैं अनु हूँ। मैं आज आपको अपनी कहानी कहूँगी। मैं एक साधारण बंगाली परिवार से हूँ। लगभग हर भारतीय लड़की की तरह मैंने भी एक सपना देखा था कि मेरा सपनों का राजकुमार मुझे अपने पलको पर रखेगा , जीवन के हर कदम पर मेरा साथ देगा और न जाने क्या-क्या। देखते –देखते वह दिन आ गया जब हमारा पूरा घर शहनाई की आवाज से गूंज उठी।

घर रजनीगंधा के सुगंध से महक रहा था। माँ और बाबूजी व्यस्त हो इधर उधर दौड़ रहें थे पर बीच-बीच में करुण दृष्टि से मुझे देख रहें थे। मेरा मन एक ऊहापोह में था। एक ओर वर्षों का प्रिय आँगन छोडने का दुख तो दूसरी ओर नई जिंदगी का उमंग। अचानक 'वर आ गया' की धून से पूरा माहौल चहक गया। अनायास ही मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया। सभी भागकर वर देखने गए और तुरंत लौटकर आए और मुझे वहाँ का आंखो देखा हाल सुनने लगे, मैं जता रही थी कि मुझे कोई उत्सुकता नहीं हैं। फिर आया वह क्षण जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार था। शर्माती सकुचाती मैं वरमाला लिए मंडप में पहुंची ही थी कि अचानक मंद रूआँसे आवाज में अपने पिता को किसी से बोलते सुना, लगा- वो जैसे विनती कर रहें हो। मैं सब भूल पिता को देखने लगी। लेकिन दूसरा जो आवाज था वो मेरे ससूर जी का था जो कुछ दो लाख को लेकर ज़ोर- शोर से चिल्ला रहें थे और तुरंत वह रुपया न मिलने पर लड़का ले जाने की बात भी कर रहें थे। सहमी सी मैं अपने आदर्श पुरुष के चेहरे का भाव समझने की कोशिश कर रही थी। मेरी नज़र उनसे उनके पिता के व्यवहार के लिए विरोध का आशा भी कर रहीं थी। पर, मैंने उन्हे भी पिता का साथ देते पाया। मैंने कभी भी अपने बाबूजी को किसी के सामने टूटते नहीं देखा था। आज उनकी यह दशा देख मैं धक सी रह गई। मेरे पिता ने महीने भर में पूरा रुपया देने का वादा किया और सर झुकाकर खड़े हो गए।

यहीं से शुरू हुआ मेरे सपनों का टूटने का सिलसिला। बचपन में जैसे मैं अपने गुड्डे – गुड़िया का ब्याह रचाती थी उसी प्रकार मेरी भी शादी हो गयी। न कोई उमंग ,न कोई आशा , न प्यार और विश्वास बस एक खरीदी गई कठपुतली की तरह मैं एक नए परिवेश में आ गई। पहले दिन से ही मुझे हर बात पर ताना दिया जाता। सुबह किसी तरह काम निपटाकर अगर चाय पीने लगी तो ताना। कभी किसी ने नहीं पूछा कि मैंने कुछ खाया भी या नहीं। मैंने कभी अपने मायके में कुछ नहीं बताया। शादी के बाद से मेरे पापा मेरे ससुराल कभी नहीं आए। मन में अभिमान लिए मैं रात दिन छुपकर आँसू बहाती। और फिर सुबह से मशीन के तरह काम में लग जाती। सास-ससूर ही नहीं पति, देवर यहाँ तक की ननद भी जब तब मुझ पर हाथ उठाते। कोई नहीं था जिसे मैं अपना दुखरा सुना सकूँ।

छ: महीना बीत चूका था मेरे शादी को। पर मुझे लगता था कि मैं वर्षों से कालकोठरी में कैद हूँ। दिवाली आने वाली थी। सारा घर सज रहा था। नए-नए गहने , कपड़े और मिठाइयाँ खरीदी जा रही थी पर मुझे कोई पुछने वाला नहीं था। कभी- कभी मैं अपने इस ब्याह का मतलब खोजती रहती थी पर कभी जान नहीं पाई थी कि मैं इस घर में आई क्यों। अचानक मेरे भाई और भैया आए। अपने साथ ढेरो सामान लाये थे। मैं जानती थी कि उसे खरीदने में मेरे माँ-पापा को कितना कष्ट करना पड़ा होगा। घर के सभी सारे सामानों के नुक्स निकालने में व्यस्त थे। मेरे दोनों भाई सर झुकाये बहन के भाई होने का दर्द झेल रहें। मेरी आँखें अपने भाइयों को कभी न आने कि विनती कर रहा था। चारों तरफ पटाखे जल रहें थे, सारा मुहल्ला दिये और आलोक सज्जा से सज्जित था। मैं अपने बीते दिवाली की सोच में डूबी थी कि अचानक किसी ने मेरी आंखे बंद कर दी। चारों तरफ अंधेरा छा रहा गया। केरोसिन का सा महक सा लगा। फिर

अचानक सारा शरीर जैसे जलने लगा। फिर क्या हुआ मुझे कुछ नहीं मालूम लेकिन जब होश आया मैंने खूद को एक चौल में पाया। मेरे सामने बिरजू काका (मेरे ससुराल के कार चालक) और मन्नू की माँ खड़े थे। मन्नू की माँ यानि हमारे ससुराल की बाई। दोनों की आँखें नम थी। उन्होने मुझे ढ़ाढ्स बढ़ाया और सारी घटना कह सुनाई। असल में दिवाली के दिन मेरे घरवालो ने मुझे जलाकर मारने का प्लान बनाया था पर किसी तरह यह बात बिरजू काका को पता लग गयी थी। वे मन्नू और मन्नू की माँ को साथ लेकर किसी तरह घर में छिपकर बैठ गए और जैसे ही सब मिलकर मुझ पर आग लगाया बिरजू चाचा ने पहले मेन स्विच आफ किया और मन्नू की माँ ने मन्नू के साथ मिलकर पलक झपकते ही मुझे लेकर आँखों से ओझल हो गए। शायद उन ज़ालिमों को मालूम भी नहीं कि मैं गई तो गई कहा। शादी के बाद से पहली बार मुझे किसी से अपनेपन का एहसास हुआ था। और मैं रो पड़ी थी।

बिरजू चाचा की मदद से मैं मायके आ गई। लेकिन आज मैं एक बदली हुई अनु थी। साल भर पहले की वह चंचल , भोली अनु न जाने कहाँ खो गई थी। मैं बदल गई थी। आज मेरे पास एक सपना था। मैं कुछ भी कर अपने पैरो में खड़ा होना चाहती थी। न किसी से बोलती न हंसी मज़ाक बस खुद को तैयार करने में जूट गई थी। कहा जाता हैं , " हर रात के बाद दिन आती हैं। " उन दिनों मैं नौकरी के तालश में भटक रहीं थी। ट्रेन से गरिया स्टेशन जा रहीं थी वहाँ मेरा एक साक्षात्कार था । मैं चुपचाप खिड़की से बाहर की ओर देख रहीं थी कि अचानक किसी के रोने की आवाज़ कान में पड़ी। मैंने देखा एक मेरे ही उम्र की लड़की सिसकियाँ ले ले कर रो रहीं हैं । तभी वहाँ एक औरत आई और उससे इस तरह रोने का कारण पूछा। पता चला, उसका इस दुनिया में कोई नहीं हैं। पाँच साल पहले उसकी शादी अधेर उम्र के एक आदमी के साथ हुई थी। शराबी तो था ही उस पर मारना पीटना उसका रोज का किस्सा था। फिर भी वह सब सह रहीं थी पर कल रात उसके पति एक गैर मर्द को घर ले आए और चंद पैसो के लिए उसे उस आदमी के साथ घर में बंद कर दिया। पर ईश्वर को शायद कुछ और ही मंजूर था। वह शख्स अच्छा निकला। और उन्ही के मदद से आज वह भाग निकली है। उसकी आपबीती सुनते-सुनते मैं गरिया स्टेशन मिस कर चुकी थी। अनायास ही मेरे आँखों से आँसू बह रहें थे। अब तक वो औरत जो उस दुखियारी को सांत्वना दे रहीं थी , मेरे पास आई और बोली- "बहन लगता हैं तुम भी अपने मन में कष्टों का बोझ लिए घूम रहीं हो, हमारा एक संगठन हैं जिसका काम है महिलाओं की मदद करना।" मैंने कहाँ नहीं दीदी मुझे किसी की भी मदद नहीं चाहिए मैं अपने दम पर कुछ करना चाहती हूँ। उस औरत ने कहाँ – ' ये तो अच्छी बात हैं पर मैं भी तुमसे मदद ही चाहती हूँ। ' हैरान सी मैं उसे देख रहीं थी। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और कहाँ ," मेरा नाम सावित्री हैं। मैं भी काफी मुश्किलों का सामना करते हुए आज इस मुकाम पर हूँ कि आज कोई भी शक्ति मुझे हिला नहीं सकती। मैं हर एक नारी को आत्मविश्वास से पूर्ण देखना चाहती हूँ। क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो?' पता नहीं उनके बातों में क्या जादू था कि मैं उनके साथ चल पड़ी। आज तक मैं उन्ही के साथ हूँ। आज मेरा एक अपना जगत हैं।

इसी तरह हर एक नारी को अनु जैसे नारी से सीख लेनी चाहिए और अपना अलग जगत तैयार रखना चाहिए। जिससे कोई भी शख्स किसी भी हालत में कुछ करने से डरे। आज की नारी को अबला नारी के दायरे से निकलकर सबला बनना हैं हो जो न स्वयं उसे बल्कि घर और समाज को भी बेहतर बनाएगा।

जीवन का अनोखा रिश्ता

आकांक्षा दास,
सुपुत्री-अमिताभ दास, एम.टी.एस.

हर एक इंसान को अपने सबसे अच्छे दोस्त को खोजने के लिए काफी मेहनत करना पड़ता है। लेकिन मैं खुश हूँ की ईश्वर ने मुझे कई दोस्त दिये जिसमे से मेरा सबसे प्रिय दोस्त मेरा प्यारा भाई आयांश है जो महज चार साल का है। उसके आने के बाद मुझे यह ज्ञात हुआ कि भाई-बहन का रिश्ता कितना, मूल्यवान और गहरा होता है।

मुझे आज भी वह दिन याद है जब हमारे परिवार में एक नए सदस्य का आगमन हुआ था। आज भी मैं उस पल को याद कर मुस्कुराती हूँ कि जब मेरे भाई के जन्म की खबर मेरी दादी ने मुझे दी। मुझे मेरे परिवार में दादा-दादी और माता-पिता का स्नेह तो भरपूर मिला लेकिन जब मैं अपने साथी मित्रों को अपने-अपने भाई-बहनों के साथ खट्टे-मीठे पल व्यतीत करते हुए देखती थी तो मुझे वह खालीपन सताता था। मेरे मन में विचार आते थे कि काश मेरा भी कोई बहन या भाई होता तो मैं भी उसे बहुत प्यार करती और उसका ध्यान रखती। मेरी यह इच्छा 9 मई 2014 को पूरी हो गई। इस दिन मेरे भाई आयांश का जन्म हुआ, तब मैं 9 वर्षीय बालिका थी। आखिरकार ईश्वर ने मेरे एक भाई की इच्छा पूरी कर दी।

मैंने एक भाई पाने के बाद बहुत सी बातें जानी। मैंने भाई-बहन के रिश्ते के विषय में अनोखी बातें जानी जो बातें मैंने अपने मित्रों के भाई-बहन के रिश्ते को देखकर गौर नही किया था। भाई-बहन का रिश्ता ऐसा है जिसमें हमे एक ऐस साथी मिल जाता है जो हमारे जीवन को अनेक रंगो से भर देता है, कभी अपने शैतानियों से तो कभी अपनी मासूम हरकतों से। मेरे जीवन के खालीपन को भरने के लिए अब मेरा भाई मेरे पास है जिसे पाकर मैं बहुत खुश हूँ। मेरे भाई का मुझे वह "दीदी" कह कर पुकारना अपनी छोटी-छोटी परेशानियों मुझसे बांटना, तोतलेपन के साथ मुझे छोटी-छोटी बातें बोलने मुझे बहुत आनंद देता है। वह कभी भी मुझे अकेले होने का अनुभव नही होने देता। उसका इधर-उधर दौड़ना मुझे मारना कभी-कभी मुझे गुस्सा दिलाता है लेकिन उसकी मासूम मुस्कान को देखकर मेरा गुस्सा को ठंडा हो जाता है।

जितना मुझे इन चार सालों में ज्ञात हुआ है कि मेरा भाई-भाई होने का कर्तव्य निभाता है। जब भी माँ या पापा मुझे डांटते है तो वह मम्मी-पापा को किसी ना किसी तरह अपनी छोटी-छोटी हाथों से रोक ही लेता है। अगर उसे कोई कुछ देता है तो वह मेरे लिए भी माँग लेता है।

मैं हमेशा अपने भाई कि सुरक्षा के लिए सतर्क रहने कि कोशिश करती हूँ। मैं उस पर कभी भी कोई मुसीबत नहीं आने देना चाहती हूँ। वह मेरे जीवन का सबसे अनमोल उपहार है। एक बार की बात है जब वह एक वर्ष का था और तितली पकड़ने की कोशिश में छत से गिर गया

था, जब मैंने यह खबर सुनी थी तो जैसे मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई थी। मैं विचलित हो गई थी। मैं इतनी अधिक विचलित हो गई थी कि मेरे हाथ-पैर काँपने लगे थे और मैं चल भी नही पा रही थी। घर आकर खबर मिली कि उसकी हालत ठीक है, ज्यादा डरने की बात नहीं है फिर भी मन अशांत था और मेरे आँसू रुक ही नही रहे थे। जब भाई घर आया तो संतुष्टि मिली। वह तो ठहरा एक साल का बच्चा, उसके ऊपर क्या बीती उसे उसका अंदाजा कहाँ। वह घर में पहले की तरह दौड़-भाग करने लगा। उसे खेलता देख मुझे भी खुशी मिली।

हमलोग हर साल रक्षाबंधन मनाते हैं ये सोचकर कि भाई को राखी बाँधने से वह हमारी रक्षा करेगा। सिर्फ भाई का नही हमारा भी यह कर्तव्य होता है कि हम उनका पूरी तरह ख्याल रखें। हमें उनके लिए दूसरी माँ बनना चाहिये वर्ना हम दीदी किस काम के।

उस दिन के बाद मुझे ज्ञात हुआ कि वह मेरे लिए कितना महत्व रखता है। उसकी मुस्कान मेरे चेहरे पर भी खुशी ले आती है। शायद हर एक इंसान के चेहरे पर उनके छोटे भाई-बहन की मुस्कान खुशी लाती है। अतः मेरा ईश्वर से यह प्रार्थना है कि वह हर एक भाई-बहन, भाई-भाई, बहन-बहन आदि के रिश्ते तो बनाए रखे। कोई भी भाई-बहन, भाई-भाई, बहन-बहन आदि के बीच में कभी कोई द्वेष ना आए, सब खुश रहे और एक दूसरे की रक्षा करते रहें।

इच्छापूर्ति

श्रीजीता भादुरी,
सुपुत्री-संयुक्ता भादुरी, हिन्दी अधिकारी

रघु एक दस वर्षीय बालक था। वह होनहार और बहुत ही प्यारा बच्चा था। वह पाँचवी कक्षा में पढ़ता था। उसका एक शौक था – 'पेन कलेक्शन'। उसके पास तरह तरह के कलम का भंडार था। प्रतिदिन सोने से पहले वह अपने पेन का भंडार निकालता और बड़े शौक से उन्हें सहलाता और फिर बड़े यतन से उन्हें रख देता। उसके सभी दोस्त, रिश्तेदार यहाँ तक की आस-पड़ोस के लोगो को भी मालूम था कि रघु को कलम से कितना लगाव हैं। एकबार उसके मामाजी अमेरिका से उसके लिए एक कलम लेकर आए जो अपने आप में अनोखा था। वह कलम उसके सभी कलम से अलग था। रघु का मन उस पेन पर ऐसा आया कि उसने खुद से यह वायदा किया कि वह कभी भी उस कलम को खुद से अलग नहीं करेगा और उसे हमेशा अपने साथ रखेगा। उस दिन से जैसे वह कलम उसका सुख दुख का साथी बन गया।

रविवार का दिन था। रघु अपने माता-पिता के साथ बनगांव अपने दादाजी के घर जा रहा था। हमेशा की तरह रघु का प्रिय कलम उसके पॉकेट में था। ट्रेन खचाखच भरी थी। ट्रेन से उतरते हुए किसी तरह कलम उसके पॉकेट से गिर गया, जैसे ही उसे एहासास हुआ कि उसका कलम गिर गया है। वह उसे ढूंढने लगा और जीवन में पहली बार उसने ज़िद की कि कलम लिए वगैर वह नहीं जाएगा। वह पागलों कि तरह रोने लगा। रघु के पिता ने उसे बहुत समझाया और वायदा किया कि उसे वे वैसा ही कलम किसी तरह भी मँगवा देंगे। और अगर किसी भी तरह न मिले तो मामा से कहलवाकर मँगवा देंगे। पर रघु की उदासी बनी रही।

उधर वह पेन एक भिखारी को प्लाटफ़ार्म में पड़ा मिला। पहले तो उसने उसे उठा लिया। फिर उसने सोचा, " यह मेरे किस काम का ?" और उसने कलम को ट्रेन कि जाली में टांग दिया और अपने काम में लग गया। कुछ समय तक तो कलम पर किसी की भी नजर नहीं पड़ी। फिर उसपर एक शख़्स की नज़र पड़ी। उसने कलम उठाई इधर- उधर देखा जब तसल्ली हुई कि कोई उसे नहीं देख रहा है उसने कलम अपने पॉकेट में रख लिया। कलम को देखते ही वह समझ चुका था कि वह एक कीमती और नई कलम है। वास्तव में जिस आदमी को वह कलम मिली थी वह था बहुत कंजूस। वह कलम को सही जगह कैसे प्रयोग किया जाय यहीं सोच रहा था। अचानक उसके दिमाग में जैसे बिजली कौंधी और उसे याद आया कि कुछ ही दिनों में उनके भतीजे रघु का जन्मदिन हैं और उसे कलम से बहुत लागव हैं तो, क्यो न कलम उसे दे दिया जाए। यह सोचकर वह मंद-मंद मुसकाने लगा। फिर उसने मन ही मन कहा बिना एक पैसा खर्च किये किसी को खुशी दे पाने में जो आनंद आता है वो किसी और में नहीं।

उधर रघु का जन्मदिन आ गया। सारे घर में चहल पहल था। सभी तरह- तरह के उपहार लाये थे। पर सभी अपने उपहार के साथ सुंदर- सुंदर कलम भी दिये थे। लेकिन आज रघु सब उपहारों के बीच अपने प्रिय कलम को बहुत मिस कर रहा था। रात को सब जब लौट गए थे तो रघु बेमन से अपने सभी उपहारों को खोलकर देख रहा था जैसे ही उसने अपने चाचा का दिया हुआ उपहार खोला वह खुशी से जैसे उछल पड़ा। अपने प्रिय कलम को वापस पाकर वह सब भूल दौड़कर अपने माँ पापा के पास गया और कलम दिखाया। रघु को खुश देखकर उसके माता पिता भी बहुत खुश हुए। उसके पापा ने हँसकर कहा- "अगर तुम दिल से कुछ मांगो तो सारी कायनात उसे उसे दिलवाने की कोशिश में लग जाती है। पर एक राज की बात बताऊ रघु अब तक समझ नहीं पाया है कि चाचाजी को उसी का कलम कहाँ से मिला। सिर्फ वही जानता था कि वह कलम उस जैसा नहीं बल्कि वहीं था।

रिश्ते कमाना सीखें !

आशीष मोहन सिंह , वरिष्ठ अनुवादक

बात बहुत पुरानी है। आठ-दस साल पहले कि मैं अपने एक मित्र का पासपोर्ट बनवाने के लिए दिल्ली के पासपोर्ट ऑफिस गया था। उन दिनों इंटरनेट पर फार्म भरने की सुविधा नहीं थी। पासपोर्ट दफ्तर में दलालों का बोलबाला था और खुलेआम दलाल पैसे लेकर पासपोर्ट के फार्म बेचने से लेकर उसे भरवाने, जमा करवाने और पासपोर्ट बनवाने का काम करते थे। मेरे मित्र को किसी कारण से पासपोर्ट की जल्दी थी, लेकिन दलालों के दलदल में फंसना नहीं चाहते थे।

हम पासपोर्ट दफ्तर पहुंच गए, लाइन में लग कर हमने पासपोर्ट का तत्काल फार्म भी ले लिया। पूरा फार्म भर लिया। इस चक्कर में कई घंटे निकल चुके थे, और अब हमें किसी तरह पासपोर्ट की फीस जमा करानी थी। हम लाइन में खड़े हुए लेकिन जैसे ही हमारा नंबर आया बाबू ने खिड़की बंद कर दी और कहा कि समय खत्म हो चुका है अब कल आइएगा। मैंने उससे मिन्नतें की, उससे कहा कि आज पूरा दिन हमने खर्च किया है और बस अब केवल फीस जमा कराने की बात रह गई है, कृपया फीस ले लीजिए। बाबू बिगड़ गया। कहने लगा, "आपने पूरा दिन खर्च कर दिया तो उसके लिए वो जिम्मेदार है क्या? अरे सरकार ज्यादा लोगों को बहाल करे। मैं तो सुबह से अपना काम ही कर रहा हूं।" मैंने बहुत अनुरोध किया पर वो नहीं माना। उसने कहा कि बस दो बजे तक का समय होता है, दो बज गए। अब कुछ नहीं हो सकता। मैं समझ रहा था कि सुबह से दलालों का काम वो कर रहा था, लेकिन जैसे ही बिना दलाल वाला काम आया उसने बहाने शुरू कर दिए हैं। पर हम भी अड़े हुए थे कि बिना अपने पद का इस्तेमाल किए और बिना उपर से पैसे खिलाए इस काम को अंजाम देना है। मैं ये भी समझ गया था कि अब कल अगर आए तो कल का भी पूरा दिन निकल ही जाएगा, क्योंकि दलाल हर खिड़की को घेर कर खड़े रहते हैं, और आम आदमी वहां तक पहुंचने में बिलबिला उठता है। खैर, मेरा मित्र बहुत मायूस हुआ और उसने कहा कि चलो अब कल आएंगे। मैंने उसे रोका। कहा कि रुको एक और कोशिश करता हूं।

बाबू अपना थैला लेकर उठ चुका था। मैंने कुछ कहा नहीं, चुपचाप उसके-पीछे हो लिया। वो उसी दफ्तर में तीसरी या चौथी मंजिल पर बनी एक कैंटीन में गया, वहां उसने अपने थैले से लंच बॉक्स निकाला और धीरे-धीरे अकेला खाने लगा। मैं उसके सामने की बेंच पर जाकर बैठ गया। उसने मेरी ओर देखा और बुरा सा मुंह बनाया। मैं उसकी ओर देख कर मुस्कुराया। उससे मैंने पूछा कि रोज घर से खाना लाते हो? उसने अनमने से कहा कि हां, रोज घर से लाता हूं। मैंने कहा कि तुम्हारे पास तो बहुत काम है, रोज बहुत से नए-नए लोगों से मिलते होगे? वो पता नहीं क्या समझा और कहने लगा कि हां मैं तो एक से एक बड़े अधिकारियों से मिलता हूं। कई आईएएस, आईपीएस, विधायक और न जाने कौन-कौन रोज यहां आते हैं। मेरी कुर्सी के सामने बड़े-बड़े लोग इंतजार करते हैं। मैंने बहुत गौर से देखा, ऐसा कहते हुए उसके चेहरे पर अहं का भाव था। मैं चुपचाप उसे सुनता रहा। फिर मैंने उससे पूछा कि एक रोटी तुम्हारी प्लेट से मैं भी खा लूं? वो समझ नहीं पाया कि मैं क्या कह रहा हूं। उसने बस हां में सिर हिला दिया। मैंने एक रोटी

उसकी प्लेट से उठा ली, और सब्जी के साथ खाने लगा। वो चुपचाप मुझे देखता रहा। मैंने उसके खाने की तारीफ की, और कहा कि तुम्हारी पत्नी बहुत ही स्वादिष्ट खाना पकाती है। वो चुप रहा।

मैंने फिर उसे कुरेदा। तुम बहुत महत्वपूर्ण सीट पर बैठे हो। बड़े-बड़े लोग तुम्हारे पास आते हैं। तो क्या तुम अपनी कुर्सी की इज्जत करते हो?

अब वो चौंका। उसने मेरी ओर देख कर पूछा कि इज्जत? मतलब?मैंने कहा कि तुम बहुत भाग्यशाली हो, तुम्हें इतनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है, तुम न जाने कितने बड़े-बड़े अफसरों से डील करते हो, लेकिन तुम अपने पद की इज्जत नहीं करते। उसने मुझसे पूछा कि ऐसा कैसे कहा आपने? मैंने कहा कि जो काम दिया गया है उसकी इज्जत करते तो तुम इस तरह रुखे व्यवहार वाले नहीं होते। देखो तुम्हारा कोई दोस्त भी नहीं है। तुम दफ्तर की कैंटीन में अकेले खाना खाते हो, अपनी कुर्सी पर भी मायूस होकर बैठे रहते हो, लोगों का होता हुआ काम पूरा करने की जगह अटकाने की कोशिश करते हो। मान लो कोई एकदम दो बजे ही तुम्हारे काउंटर पर पहुंचा तो तुमने इस बात का लिहाज तक नहीं किया कि वो सुबह से लाइन में खड़ा रहा होगा, और तुमने फटाक से खिड़की बंद कर दी। जब मैंने तुमसे अनुरोध किया तो तुमने कहा कि सरकार से कहो कि ज्यादा लोगों को बहाल करे। मान लो मैं सरकार से कह कर और लोग बहाल करा लूं, तो तुम्हारी अहमियत घट नहीं जाएगी? हो सकता है तुमसे ये काम ही ले लिया जाए। फिर तुम कैसे आईएएस, आईपीएस और विधायकों से मिलोगे? भगवान ने तुम्हें मौका दिया है रिश्ते बनाने के लिए। लेकिन अपना दुर्भाग्य देखो, तुम इसका लाभ उठाने की जगह रिश्ते बिगाड़ रहे हो। मेरा क्या है, कल भी आ जाउंगा, परसों भी आ जाउंगा। ऐसा तो है नहीं कि आज नहीं काम हुआ तो कभी नहीं होगा। तुम नहीं करोगे कोई और बाबू कल करेगा। पर तुम्हारे पास तो मौका था, किसी को अपना अहसानमंद बनाने का। तुम उससे चूक गए।

वो खाना छोड़ कर मेरी बातें सुनने लगा था। मैंने कहा कि पैसे तो बहुत कमा लोगे, लेकिन रिश्ते नहीं कमाए तो सब बेकार है। क्या करोगे पैसों का? अपना व्यवहार ठीक नहीं रखोगे तो तुम्हारे घर वाले भी तुमसे दुखी रहेंगे। यार दोस्त तो नहीं हैं, ये तो मैं देख ही चुका हूं। मुझे देखो, अपने दफ्तर में कभी अकेला खाना नहीं खाता। यहां भी भूख लगी तो तुम्हारे साथ खाना खाने आ गया। अरे अकेला खाना भी कोई ज़िंदगी है? मेरी बात सुन कर वो रुंआसा हो गया। उसने कहा कि आपने बात सही कही है साहब। मैं अकेला हूं। पत्नी झगड़ा कर मायके चली गई है। बच्चे भी मुझे पसंद नहीं करते। मां है, वो भी कुछ ज्यादा बात नहीं करती। सुबह चार-पांच रोटी बना कर दे देती है, और मैं तनहा खाना खाता हूं। रात में घर जाने का भी मन नहीं करता। समझ में नहीं आता कि गड़बड़ी कहां है? मैंने हौले से कहा कि खुद को लोगों से जोड़ो। किसी की मदद कर सकते तो तो करो। देखो मैं यहां अपने दोस्त के पासपोर्ट के लिए आया हूं। मेरे पास तो पासपोर्ट है। मैंने दोस्त की खातिर तुम्हारी मिन्नतें कीं। निस्वार्थ भाव से। इसलिए मेरे पास दोस्त हैं, तुम्हारे पास नहीं हैं। वो उठा और उसने मुझसे कहा कि आप मेरी खिड़की पर पहुंचो। मैं आज ही फार्म जमा करुंगा। मैं नीचे गया, उसने फार्म जमा कर लिया, फीस ले ली। और हफ्ते भर में पासपोर्ट बन गया। बाबू ने मुझसे मेरा नंबर मांगा, मैंने अपना मोबाइल नंबर उसे दे दिया और चला आया। कल नव वर्ष के मौके पर मेरे पास बहुत से फोन आए। मैंने करीब-करीब सारे नंबर उठाए। सबको हैप्पी न्यू इयर बोला। उसी में एक नंबर से फोन आया, "रविंद्र कुमार

चौधरी बोल रहा हूं साहब।" मैं एकदम नहीं पहचान सका। उसने कहा कि कई साल पहले आप हमारे पास अपने किसी दोस्त के पासपोर्ट के लिए आए थे, और आपने मेरे साथ रोटी भी खाई थी। आपने कहा था कि पैसे की जगह रिश्ते बनाओ। मुझे एकदम से याद आ गया। मैंने कहा हां जी चौधरी साहब कैसे हैं? उसने खुश होकर कहा, "साहब आप उस दिन चले गए, फिर मैं बहुत सोचता रहा। मुझे लगा कि पैसे तो सचमुच बहुत लोग दे जाते हैं, लेकिन साथ खाना खाने वाला कोई नहीं मिलता। सब अपने में व्यस्त हैं। मैं साहब अगले ही दिन पत्नी के मायके गया, बहुत मिन्नतें कर उसे घर लाया। वो मान ही नहीं रही थी। वो खाना खाने बैठी तो मैंने उसकी प्लेट से एक रोटी उठा ली, कहा कि साथ खिलाओगी? वो हैरान थी। रोने लगी। मेरे साथ चली आई। बच्चे भी साथ चले आए।

साहब अब मैं पैसे नहीं कमाता। रिश्ते कमाता हूं। जो आता है उसका काम कर देता हूं। साहब आज आपको हैप्पी न्यू इयर बोलने के लिए फोन किया है। अगल महीने बिटिया की शादी है। आपको आना है। अपना पता भेज दीजिएगा। मैं और मेरी पत्नी आपके पास आएंगे। मेरी पत्नी ने मुझसे पूछा था कि ये पासपोर्ट दफ्तर में रिश्ते कमाना कहां से सीखे? तो मैंने पूरी कहानी बताई थी। आप किसी से नहीं मिले लेकिन मेरे घर में आपसे रिश्ता जोड़ लिया है। सब आपको जानते हैं। बहुत दिनों से फोन करने की सोचता था, लेकिन हिम्मत नहीं होती थी। आज न्यू इयर का मौका निकाल कर कर रहा हूं। शादी में आपको आना है। बिटिया को आशीर्वाद देने। रिश्ता जोड़ा है आपने। मुझे यकीन है आप आएंगे। वो बोलता जा रहा था, मैं सुनता जा रहा था। सोचा नहीं था कि सचमुच उसकी ज़िंदगी में भी पैसों पर रिश्ता भारी पड़ेगा।

लेकिन मेरा कहा सच साबित हुआ। आदमी भावनाओं से संचालित होता है। कारणों से नहीं। कारण से तो मशीनें चला करती हैं।

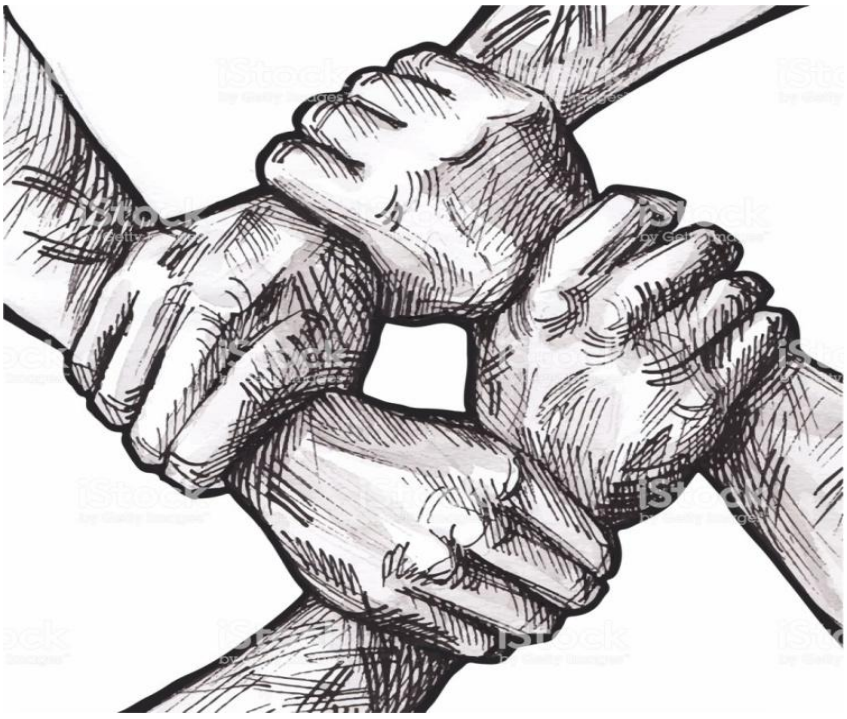

पिता की सीख

श्रेयश भादुरी, सुपुत्र-संयुक्ता भादुरी,
हिन्दी अधिकारी

बहुत समय पहले की बात है, किसी गाँव में एक किसान रहता था जो बहुत ही मेहनती और बुद्धिमान था साथ ही साथ वह था बहुत ईमानदार। उसने अपने मेहनत के बलबूते पर बहुत पैसा कमाया था। जो उसके दोनों बेटो को मिलना था। चूंकि वह अब वह बूढ़ा हो चला था और उसे लगने लगा था कि वह ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहेगा तो उसे लगा कि संपत्ति देने से पहले बेटो को कुछ नसीहत देना भी ज़रूरी है जिससे दोनों जीवन में कोई गलती न करें। तो एक दिन उन्होने अपने दोनों बेटो को बुलाया और कहा- " बच्चों अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए दो बात हमेशा याद रखना पहला- समय का सदुपयोग और पैसों की बचत को जीवन में महत्व देना और दूसरा- हमेशा अहंकार से दूर रहकर सेवा और दया को अहमियत देना। फिर उन्होने अपने संपत्ति के बँटवारे का कागज बेटों को थमा दिया। और उन्हे हमेशा एक दूसरे का साथ निभाने का सुझाव भी दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद किसान चल बसा।

कुछ समय तक तो दोनों ने बिना कोई काम किए आराम की जिंदगी बिताई। फिर उन्हें अपने पिता की पहली नसीहत याद आई और दोनों ने अपने अपने हिस्से से अलग अलग काम करने का सोचा। बड़ा रामू भिन्न देश मे अपना किस्मत आज़माने निकाल पड़ा और छोटा रमेश शहर में जाकर व्यापार करने लगा। दोनों ने बहुत धन कमाया। उन्होनें अपने पिता से मिली संपत्ति को दोगुना चौगुना कर दिया। रामू अपने काम के साथ-साथ पिता द्वारा दिये दूसरे नसीहत के अनुसार दान और सेवा भी करता था। इसलिए लोगो से वह बहुत प्यार भी बंटोरता था पर रमेश पैसे कमाने में ऐसा उलझा कि उसकी इंसानियत खत्म हो गई थी।

रामू को जब यह बात पता लगी तो वह अपने भाई को शिक्षा देने के उद्देश्य से उसके शहर आया। एक बूढ़े भिखारी के वेषभूषा में वह रामू के घर पहुंचा। कराहते हुए वह बोला, " बेटा तीन दिन से कुछ नहीं खाया हूँ मुझे कुछ खाने को दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा।" रामू ने चिल्लाते हुए कहा- " भाग यहाँ से यहाँ कोई भीख- वीख नहीं मिलेगा। अभी यहाँ से दूर नहीं हुआ तो चाबुक से मरवाऊंगा।" रामू तुरंत वहाँ से चला गया। कुछ समय बाद वह फिर से आया पर इस बार वह स्ववेश में ही आया। रामू को देखते ही रमेश खुशी से उछल पड़ा। वह अपने रसोइए को तरह- तरह के पकवान बनाने को कहकर रामू के पास आया। रामू मुस्कुरा रहा था। रमेश ने हँसने का कारण पूछा तो रामू ने कहा-"भाई, क्या तुम पिताजी की नसीहत भूल गए हो? रमेश ने कहा- क्यों?" मैं तो पिताजी के कहे अनुसार समय का अनुपालन करता हूँ और पैसों का बचत भी करता हूँ। मेरे पास तो अभी पिताजी के तुलना में चौगुनी संपदा है। रामू ज़ोर से हंस पड़ा और बोला पिताजी की दूसरी नसीहत भूल गए हो क्या ? " रमेश ने कहा, ' क्या मतलब ?' तब रामू

ने उसे याद दिलाया कि जब वह भिखारी के रूप में आया था तो किस तरह रमेश ने उसे दुतकारा था। जो दया भाव और सेवा के खिलाफ हैं। और यहीं इंसान को अहंकारी बनाता हैं। रमेश को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने रामू से माफ़ी मांगी। अब रमेश एक बदला हुआ इंसान बन गया था। धीरे- धीरे वह भी लोगो का प्रिय पात्र बन गया। अब जाकर उसे अपने पिताजी द्वारा दिये गए सीख की अहमियत पता चली और वह यह भी जान गया था कि सच्चा धन केवल लोगों के प्यार और सम्मान में ही है।

चलो निकल पड़े

देवब्रत सरकार, स. ले. प. अ.

आज मन हुआ कि मैं अपने पश्चिम बंगाल के कुछ स्थानों को आपके समक्ष रखूँ जिससे कभी अचानक किसी को दो एकदिन के लिए कहीं घूमने का मन करे तो मेरे अनुभव से उन्हे वो मौका मिल जाए।

आज मैं हुगली जिले के एक स्थान के बारे में आपको जानकारी देना चाहूँगा। पिछले दिसम्बर मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ बंडेल स्टेशन के लिए रवाना हुआ। स्टेशन के बाहर ब्रेकफ़ास्ट कर हमने टोटों पकड़ा और बंडेल चर्च पहुँचे ...हमारा पाँच जनो का ग्रुप था। काफी समय तक चर्च में मूग्ध होकर घूमते रहें.... चर्च के अंदर का शांत परिवेश ने हमारे जैसे चंचल मन को भी सुकून दिया। चर्च के ऊपरी भाग से जुबिली पार्क के दृश्य ने हमारा मन मोह लिया। फिर हम सब निकल पड़े इमामबड़ा देखने। इमामबड़ा के घुमावदार सीड़ियों से होकर चढ़ गए इमामबड़ा मीनार में (ट्विन क्लॉक टावर) विशालाकाय घंटा देखने की मंशा लिए जो आज भी इंसान द्वारा चलाया जाता हैं। मीनार में हमे एक विस्तृत छत दिखा। इमामबड़ा का पिछला हिस्सा बेहद खुबसूरत हैं। वहाँ हमने सूर्य चालित घड़ी देखी और हूगली नदी। फिर हमलोग निकल पड़े नदी भ्रमण के लिए। लौटकर एक टोटों लेकर पास ही के एक मंदिर – हंसेश्वरी जा पहुँचे। ईश्वर कि कृपा से केवल रु. 35.00 में भोग प्रसादी मिल गया। मूल मंदिर के पास विष्णुपुर के जैसे बना टेराकोटा का मंदिर मेरा मन मोह लिया। महान साहित्यकार शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय का निवासस्थल एवं उनका पुस्तकलाय देखा। फिर हम निकल पड़े लाहिड़ी बाबा के मंदिर। यह यात्रा पथ अतीव मनोरम है। सरस्वती नदी पर एक छोटा सा ब्रिज पार करते हुए एक बांस बागान से होकर कुछ आम के बागीचे से हम गुजरे। वहाँ हमे कई मोर दिखे। इस तरह सुंदर नज़ारा का आनंद लेते हुए हम पहुँचे जल मंदिर। इस मंदिर का नियम बहुत हद तक अमृतसर के स्वर्ण मंदिर से मिलता हैं। सीढ़ियों से होते हुए मूल मंदिर में प्रवेश करना पड़ता हैं। मंदिर, चर्च के दर्शन के साथ- साथ प्रकृति के अनुपम नज़ारे का आनंद उठाकर आज हमारा मन आल्हादित था। अब हमे लौटना था , टोटों वाले से पहले ही हमने तय कर लिया था कि यात्रा की समाप्ति पर वह हमे बंडेल स्टेशन छोड़ेगा। सिर्फ छ: सौ रुपए के बदले इतना उम्दा सफर। क्या कहते हैं ?

चलिए अब मैं आपको ले चलूँगा एक ऐसी जगह जिसे लोग सुंदरी कहते हैं। यह कोई नारी नहीं हैं वरन अरण्य सुंदरी हैं। मैं घूमने का शौकीन हूँ। चाहे कड़कती धूप हो या कपकपाती ठंड नहीं तो घनघोर बारिस मैं हमेशा तैयार हूँ सफर के लिए। लोग मुझे कहते हैं मेरे पैरो के नीचे जैसे सरसों हैं इसलिए हमेशा चलता रहता हूँ। अचानक बरसात में मुझे कहीं प्रकृति के साथ भीग आने का मन हुआ। इस बार हमारा लक्ष्य स्थल था बर्द्धमान जीले का भालकी माचान। कोलकाता से केवल 145 कि.मी. की दूरी पर स्थित जंगल।

संगी वहीं पाँच। घरवालो को डर था कि बरसात में जंगल में मच्छर, मक्खी, मेंडक, साँप आदि का बहुत प्रकोप रहता हैं। सभी के आपत्ति को अनसूनी करते हुए प्रकृति से खूबसूरती चुराने कि मंशा लिए हम पंच पांडव निकल ही पड़े अपने अरण्य यात्रा के लिए। दुर्गापुर एक्सप्रेस वे से शक्तिगढ़ के लैंगचा की दुनिया (एक विशेष प्रकार कि मिठाई) में सुबह नौ बजे पहुँचे। नाश्ता लेने के बाद हम आगे बढ़ गए। पराज मोड से होकर दाहिने तरफ घूमकर 14 कि.मी. जाकर हम पहुंचे भालकी माचान अरण्य सुंदरी होटल। केयरटेकर बंखिम दा ने हमारा खुशी-खुशी स्वागत किया। सामान रखकर ही हम निकल पड़े जंगल सफर के उद्देश्य से।

बरसात में जंगल की हरियाली में जैसे और निखार आ जाता हैं। हम प्रकृति के सौंदर्य में रम से गए थे। सम्पूर्ण पृथ्वी से अलग किसी से कोई संपर्क नहीं खुद को कोलंबस से कुछ कम नहीं लग रहा था। लग रहा था कि हम भी कुछ आविष्कार कर ही लेंगे। एक दूसरे से बातें करते हुए और सुंदर नजारों को कैमरा बंद करते हुए हम जंगल के भीतरी हिस्से तक पहुँच गए थे। ऐसे सुंदर नज़ारों में खो जाना किसी के लिए भी लाज़मी हैं। पर अब हम वास्तव के धरातल में उतर आए थे। हमे बाहर जाने का कोई ठिकाना नहीं मिल रहा था। इंटरनेट कनैक्शन न होने के कारण हम गूगल की सहायता से भी मुहताज रह गए। मन में हिम्मत लिए किसी तरह आगे बढ़ते रहे। लगभग आधे घंटे तक हम इधर उधर भटकते रहे कि अचानक एक सड़क दिखा। पक्का सड़क पाकर हमारे जान में जान आई। छोटा सा गाँव है, किसी तरह पुछते हुए हम अपने होटल पहुँचे। दोपहर के भोजन के बाद एक गाड़ी लेकर हम निकल पड़े भालकी गाँव देखने मिट्टी का बना एकमंजिला या द्विमंजिला मकानो से बना छोटा सुंदर गाँव। गाँव में इधर उधर कुछ सुंदर टेराकोटा का मंदिर भी हैं पर रखरखाव के अभाव से लगभग टूटाफूटा हैं।

शाम को होटल लौटने पर तंदूरी चिकेन तैयार मिला। रात में उम्दा देशी चिकेन और रोटी का डिनर वाह! क्या कहने।

अगले दिन सुबह- सुबह होटल से जुड़े तालाब से संलग्न पार्क में बैठकर भोर के प्रकृति का आनंद उठाया। तालाब के चारो तरफ बना यह पार्क वाकई खुबसूरत है। यह इस सुंदरी लॉज का ही भाग है। अब हमे लौटना था पर मन ही मन पुन: लौटने का वायदा कर हम प्रकृतिक जंगल छोड़कर कोंक्रीट के जंगल की ओर चल पड़े।

जीवन रेखा

श्रीजीता भादुरी,
सुपुत्री-संयुक्ता भादुरी, हिन्दी अधिकारी

हर्ष छ: वर्ष का एक बच्चा था। वह अपने माँ के साथ मैंगलोर शहर में रहता था। वह खेल-कूद का शौकीन था। खेल चाहे कैसा भी हो वह हमेशा तैयार रहता। जब भी उसे समय मिलता वह कुछ न कुछ खेलने लगता। मृदुला उसकी माँ जो कि एक नामी चित्रकार थी मन ही मन अपने बेटे को भी अपने जैसा एक चित्रकार बनाना चाहती थी। मृदुला विधवा थी। उसके पति रजनीश फूटबाल के एक नामी खिलाड़ी हुआ करते थे पर खेल के मैदान मे ही दुर्घटनावश तीन साल पहले उनकी जान चली गई थी। और तब से खेल से मानो मृदुला को चिढ़ सा था। मृदुला के लिए केवल हर्ष का ही सहारा था।

एक दिन हर्ष से एक सामान्य घर सा चित्र ठीक से नहीं बन पा रहा था। असल में उससे सीधी रेखा नहीं खींची जा रहीं थी। परेशान होकर मृदुला उस पर बहुत चिल्लाई और उसे कई चपत भी मार दिये। लेकिन अगले ही दिन स्कूल के वार्षिक खेल प्रतियोगिता में हर्ष को कई सारे इनाम मिले। मृदुला खुश होने के बजाय उस पर टूट पड़ी। बेचारा हर्ष अपनी गलती नहीं समझ पाया। मृदुला ने कभी भी किसी खेल कूद में भाग लेने के लिए मना कर दिया। आज हर्ष बहुत दुखी था।

हर्ष के स्कूल में पी०टी.एम था। जब मृदुला प्रिन्सिपल के कमरे में पहुंची तो सबने उसका तहे दिल से स्वागत किया। हर्ष के पढ़ाई और खेलकूद में रुचि की तारीफ भी की पर वहीं उसके ड्राइंग पर ध्यान देने कि हिदायत भी दी। मृदुला इतनी दुखी थी कि उस दिन उसने हर्ष को न तो खाने दिया न पीने बस दोपहर भर उससे चित्रकारिता कराती रहीं। शाम होते होते भूख के मारे हर्ष रोने लगा। तब जाकर मृदुला को अपनी गलती का एहसास हुआ।

कई दिन बीत चुके थे, आज हर्ष का ड्राइंग का टेस्ट था, मृदुला उसे स्कूल छोडने जा रहीं थी। मृदुला ने हर्ष को स्कूल गेट में खड़ा किया और खूद कार पार्क करने चली गई। लौटने पर उसे हर्ष कहीं नहीं दिखा। वह इधर उधर देख ही रहीं थी कि अचानक उसने देखा कि हर्ष एक पतंग के पीछे रास्ते में दौड़ रहा हैं। मृदुला चिल्लाई, "हर्ष रुका" लेकिन अचानक एक कार से हर्ष टकराया। नन्हा हर्ष ज़मीन पर बेसुध पड़ा था। मृदुला मानो पत्थर सी खड़ी थी। मृदुला को पता नहीं किसने एम्ब्युलेन्स बुलवाया और कौन उसे हर्ष के साथ हस्पताल तक ले गया।

हर्ष हस्पताल में मौत के साथ लड़ रहा था। एक बेचैन सा चेहरा आइ.सी.यू के ग्लास डोर से एकटक बेड नंबर 501 के लाइफ मनीटर की ओर नज़र टिकाये खड़ी थी। उसका सुंदर आधुनिक चेहरा मुरझाया सा लग रहा था। वह मन ही मन कुछ बुदबुदा रहीं थी। वह और कोई

नहीं मृदुला थी। मॉनिटर में चलती हुई टेढ़ी-मेढ़ी रेखा इस बात का गवाही दे रहा था कि सांस अभी भी चल रहीं हैं। मृदुला मन ही मन कह रहीं थी कि "जीवन में सीधी रेखाओं की कोई आवश्यकता नहीं हैं। हर्ष तू हमेशा टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ ही खींचना मैं कभी भी तुझे नहीं कोसूंगी। मैं तेरे हर काम में तेरा साथ दूँगी। सिर्फ तू हमेशा मेरे साथ बने रहना। उसे देखकर लग रहा था जैसे वह किसी से विनती कर रही हैं।

मृदुला को अचानक लगा कि कोई कोसों दूर से उसे आवाज देकर कह रहा हैं कि " We are happy to inform you that your son is out of danger." मृदुला पीछे मुड़ी तो डॉक्टर और नर्स को खड़े पाया। दोनों के चेहरे में सुकून था। डॉक्टर ने कहाँ, "आप उससे जाकर मिल सकती हैं पर सावधान वह बहुत कमजोर हैं।"

मृदुला की आँखें हर्ष से माफी मांग रहीं थी। वह सिर्फ अपने बेटे का हाथ थामी रहीं और उसका हाथ चूमा। हर्ष ने एक फ़ीकी मुस्कान दी।

मृदुला समझ चूकी थी कि जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण टेढ़ी रेखाएँ हैं। आज उसने महसूस किया कि टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ सबसे सुंदर कला हैं। यह जीवन के होने का बोध कराती हैं।

नीति की कुछ बातें

श्री नबीन कुमार मण्डल, लिपिक

- परिश्रम से हीं काम पूरे होते हैं ना कि इच्छाओं से, जैसे कभी सोये हुए शेर के मुंह में हिरण कभी अपने–आप प्रवेश नही कर सकता।
- प्रिय वाक्य बोलने से सभी संतुष्ट होते हैं फिर भी प्रिय वाक्य बोलने में कंजूसी कैसी। बुद्धिमानों का दिन काव्यशास्त्र के द्वारा मनोरंजन में व्यतीत होता है लेकिन मूर्खों का दिन सोने, झगड़ा करने एवं व्यर्थ के कार्यों में बीतता है।
- फलवाले वृक्ष तथा गुणी व्यक्ति सदैव सबके सामने झुकते हैं पर सूखे वृक्ष एवं मूर्ख व्यक्ति कभी भी नही झुकते। सब पक्षी--- पक्षी होते हैं, सब पशु--- पशु होते हैं लेकिन हर इंसान---- इंसान नही होता।
- सदा सबका सम्मान करने वाला तथा सबकी सेवा करने वाले की चार चीजें हमेशा बढ़ती रहती है वह है – आयु, विदद्या, यश, और बल।
- कोई किसी का मित्र होकर पैदा नही होता और न ही कोई किसी का शत्रु बनकर पैदा होता। व्यवहार से ही मित्र और शत्रु बनते हैं।
- हाथ का गहना दान करने से है, सच गले का गहना है, कान का गहना शास्त्र सुनना है। अगर यही गहने हैं तो दूसरे गहने की क्या जरूरत ?
- विद्वान और राजा की तुलना नही कि जा सकती क्योंकि राजा सिर्फ अपने देश में पूजा जाता है लेकिन विद्वान हर जगह पूजा जाता है।
- सब सुखी हों, सब निरोग हों, सबका कल्याण हो एवं कोई भी दुख का भागी ना हो।

हिन्दी पखवाड़ा 2018 के दौरान आयोजित कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कार्मिक:

श्रुतलेखन

1ला पुरस्कार	बासबी चौधरी
2रा पुरस्कार	शिवानी मालाकार
3रा पुरस्कार	विमल भट्टाचार्य

निबंध लेखन

1ला पुरस्कार	स्टीफेन सौरेन
2रा पुरस्कार	सुनील कुमार
3रा पुरस्कार	शिवानी मालाकार

अनुवाद लेखन

1ला पुरस्कार	सुब्रत साहा
2रा पुरस्कार	तपन कुमार मजूमदार
3रा पुरस्कार	विभा सरकार

स्लोगन लेखन

1ला पुरस्कार	सुनील कुमार
2रा पुरस्कार	रामदेव मिश्रा
3रा पुरस्कार	ज्योतिष खालखो

कविता पाठ (हिंदीत्तर|)

1ला पुरस्कार	देवब्रत सरकार
2रा पुरस्कार	बासबी चौधरी
3रा पुरस्कार	नबीन मण्डल

कविता पाठ (हिंदी ज्ञाता|)

1ला पुरस्कार	अजय राय
2रा पुरस्कार	सुनील कुमार
3रा पुरस्कार	अमित कुमार साह

टंकण

1ला पुरस्कार	गिरि बाबू यर्रा
2रा पुरस्कार	सुनील कुमार
3रा पुरस्कार	राहुल बंदोपाध्याय

आशुभाषण

1ला पुरस्कार	देवब्रत सरकार
2रा पुरस्कार	आबीर बसाक
3रा पुरस्कार	रामदेव मिश्रा

नोट: पुरस्कार राशि/प्रोत्साहन राशि कुछ इस प्रकार है-

1ला पुरस्कार	प्रशस्ति पत्र एवं 600/- नकद
2रा पुरस्कार	प्रशस्ति पत्र एवं 500/- नकद
3रा पुरस्कार	प्रशस्ति पत्र एवं 400/- नकद

वार्षिक खेल-कूद 2018 के दौरान आयोजित कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कार्मिक:

थ्रोविंग द क्रिकेट बॉल

1ला पुरस्कार	निरूपम बिश्वास
2रा पुरस्कार	चंद्रभान प्रसाद
3रा पुरस्कार	अमित कुमार साह

हिटिंग द विकेट

1ला पुरस्कार	अमित कुमार साह
2रा पुरस्कार	निरूपम बिश्वास
3रा पुरस्कार	चंद्रभान प्रसाद

100 मीटरदौड़

1ला पुरस्कार	जयंत मजूमदार
2रा पुरस्कार	मिनटु पाल
3रा पुरस्कार	अमित कुमार साह

पेनाल्टी शूट

1ला पुरस्कार	अमित कोले
2रा पुरस्कार	पावन महतो
3रा पुरस्कार	जयंत मजूमदार

किकिंग द फुटबॉल

1ला पुरस्कार	रत्न भट्टाचार्य
2रा पुरस्कार	समीर कुमार मिद्दा
3रा पुरस्कार	देवल भट्टाचार्य

बास्केट बॉल

1ला पुरस्कार	अजय राय
2रा पुरस्कार	विमल भट्टाचार्य
3रा पुरस्कार	पवन कुमार महतो

सेग्रेगेशन द बॉल

1ला पुरस्कार	रोनोजित हाल्दार
2रा पुरस्कार	अमित कुमार साह
3रा पुरस्कार	अजय प्रमाणिक

ब्रेकिंग द हांडी

1ला पुरस्कार	सुनील कुमार
2रा पुरस्कार	तपन मजूमदार
3रा पुरस्कार	जयंत मजूमदार

पासिंग द बॉल

1ला पुरस्कार	संयुक्ता भादुरी
2रा पुरस्कार	बासबी चौधरी
3रा पुरस्कार	प्रतिमा राय

सेवा निवृतियाँ

समय चक्र अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम लंबे समय से कार्य करते आ रहे हैं उनकी सेवानिवृति का समय कब आ जाता है पता ही नहीं चलता। इस कार्यालय में उनके द्वारा की गयी सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। साथ हीं उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

श्री रणजीत कुमार
सिकदार, पर्यवेक्षक,
31.05.2018

श्री सुरोजित बसु,
व.ले.प.अ.
31.05.2018

श्री पीटर एक्का,
ब.का.क.
31.10.2018

श्री नन्द किशोर प्रसाद,
ब.का.क.
31.12.2018

श्री तरुण कुमार रक्षित,
व.ले.प.
31.12.2018

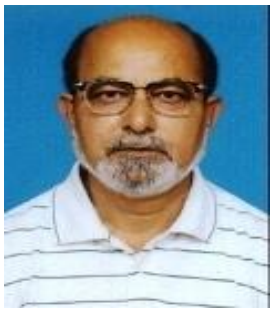

श्री देवल भट्टाचार्य,
लिपिक,
28.02.2019

श्री बुद्धेश्वर माझी,
व.ले.प.
31.01.2019

श्रद्धांजली

स्वर्गीय श्री प्रदीप कुमार बारई,
पूर्व व.ले.प.
22.05.2018

स्वर्गीय श्री चित्तरंजन हांसदा,
पूर्व व.ले.प.अ.
22.05.2018

न जायते म्रियते वा कदाचि- न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो- न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न हीं मरता है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।

मानक शब्दावली (अँग्रेजी-हिन्दी)

Amalgamation	-	समामेलन
Beating the retreat	-	समापन समारोह
Calling attention notice	-	ध्यानाकर्षण सूचना
Dealing hand	-	संबन्धित कर्मचारी
Emoluments	-	परिउपलब्धियाँ
Festival advance	-	त्योहार अग्रिम/पेशगी
Guided democracy	-	निर्देशित लोकतन्त्र
His Majesty	-	महागरिमामय
Inherent powers	-	सहज शक्तियाँ
Joint sovereignty	-	संयुक्त प्रभुसत्ता
Know-how	-	जानकारी, तकनिकी जानकारी
Liaison officer	-	संपर्क अधिकारी
Meeting in camera	-	गुप्त बैठक, बंद बैठक
Non-ministerial	-	अलिपिकीयवर्ग
Orientation course	-	अभिविन्यास पाठ्यक्रम
Packed refreshment	-	डिब्बाबंद जलपान
Questionnaire	-	प्रश्नावली
Revised estimate	-	परिशोधित प्राक्कलन
Sumptuary allowance	-	सत्कार भत्ता
Thumping majority	-	भारी बहुमत
Undelivered letter	-	अवितरित पत्र
VIP lounge	-	अतिविशिष्ट विश्रांतिका
Web based distance learning	-	वेब आधारित दूरस्थ अधिगम
Yard stick	-	मानदंड
Zero hour	-	शून्यकाल

सत्यमेव जयते
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मानक शब्दावली (हिन्दी -अँग्रेजी)

निदेशानुसार -	According to directions
आधारभूत टिप्पणी -	Background note
कामचलाऊ सरकार -	Caretaker government
तथ्यतः मान्यता -	De facto recognition
निर्वाचन मंडल, निर्वाचक गण -	Electoral college
राजकोषीय घाटा, वित्तीय घाटा -	Fiscal deficit
लेखा-शीर्ष -	Head of account
अनौपचारिक निकाय -	Informal body
न्यायपालिका -	Judiciary
मूल नक्शा -	Key map
अव्यवस्था, अराजकता -	Lawlessness
शारीरिक श्रम -	Manual labour
प्राकृतिक अभिवृद्धि -	Natural accretion
कार्यालय ज्ञापन -	Office memorandum
विचाराधीन कागज -	Paper under consideration
संगरोध -	Quarantine
गणना करना -	Reckon
संवीक्षा करना, छानबीन करना-	Scrutinize
घोर पीड़ा, प्रसव पीड़ा -	Travail
मतैक्य, सर्वसम्मति -	Unanimity
निहित स्वार्थ -	Vested interest
वृत्तिक प्रभार -	Professional Charge
नवकर्मी -	Threshold worker
समय मुहर -	Time stamp
अतिलंघन -	Infringement

लोकहितार्थ सत्यानुष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय के होनहार अधिकारी एवं अधिकारियों व कर्मचारियों के होनहार बच्चे

प्रतिवर्ष, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक विभिन्न संयुक्त राष्ट्र संघ के संगठन/एजेंसियों के पोर्टफोलियो के अनुसार वित्तीय प्रामाणन, निष्पादन, अनुपालन लेखापरीक्षा का संचालन करती है। इस कार्यालय के श्री सुनील कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी को संयुक्त राष्ट्र संघ कार्यालय के परियोजना सेवा के लेखापरीक्षक हेतु लेखापरीक्षा चक्र 2018-2019 के अवधि के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के लेखापरीक्षा के इम्तिहान के आधार पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा नामित किया गया। अनुपालन एवं वित्तीय लेखापरीक्षा (अनंतिम वित्तीय) कोपेन्हेगेन, डेन्मार्क में 8 अप्रैल से 10 मई 2019 तक संचालन हुआ।

****

ISACA ने यह प्रमाणित किया कि इस कार्यालय के श्री अनूप दास, सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी ने जनवरी 2018 में CISA के सभी आवश्यकताओं को सफल रूप से उत्तीर्ण किया।

****

समन्वय घटक, सुपुत्र अपर्णा घटक, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डेनरीच, कोलकाता-43 को वर्ष 2017-18 के दौरान NIT से M. Tech. (अंतिम वर्ष) परीक्षा में प्रथम आने पर स्वर्ण पदक से विभूषित किया गया।

****

श्री पी. सी. दास, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, कार्यालय प्रधान मण्डल लेखापरीक्षा, खड़गपुर, दक्षिण पूर्व रेलवे की सुपुरी अदिति दास वर्ष 2018 के NEET उत्तीर्ण कर R. G. Kar मेडिकल कॉलेज में दाखिला पाई।

****

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह के अवसर पर भाषण देते प्रधान निदेशक एवं निदेशक महोदया

हिन्दी दिवस समारोह के दौरान संगीत कार्यक्रम

हिन्दी दिवस समारोह के दौरान कविता पाठ

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी

हिन्दी दिवस समारोह के दौरान पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित संगोष्ठी में वक्तव्य रखते श्री नवीन प्रजापति, विभागाध्यक्ष (रा.भा.) डी.वी.सी. एवं श्री राजाराम प्रसाद, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), दक्षिण पूर्व रेलवे

हिन्दी दिवस समारोह के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम

वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता

मनोरंजन क्लब की विविध झलकियाँ

तनाव प्रबंधन के विषय पर आयोजित संगोष्ठी

वार्षिक मिलनोत्सव

कैरम टूर्नामेंट विजेता को ट्रॉफी प्रदान करते प्रधान निदेशक महोदय

फोटोग्राफी प्रदर्शनी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

मनोरंजन क्लब की विविध झलकियाँ

वार्षिक मनोरंजन कार्यक्रम - लेखा परीक्षा क्लब का वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम 15.03.2019 को रवीद्र सदन में श्री संदीप सिंह, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

वार्षिक मिलनोत्सव- 12.01.2019 को नुनेर भेड़ी, ई. एम. बाईपास के निकट कार्यालय के कार्मिकों एवं उनके परिजनों की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

तनाव प्रबंधन के विषय पर कार्यक्रम- 06.03.2019 को बी.एन.आर. सभागार में तनाव प्रबंधन के विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। डॉ. रुद्र आचार्य, सायक्रैटिस्ट एवं डॉ. गार्गी दासगुप्ता, क्लिनिकल, कोलकाता मेडिकल कालेज ने अपने बहुमूल्य सुझावो के माध्यम से कार्मिकों का ज्ञानवर्धन किया।

वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता- 04.01.2019 को बी.एन.आर स्पोर्ट्स मैदान में श्री एस संदीप सिंह, एवं श्रीमती सुप्रिया सिंह, निदेशक की उपस्थिति में धूमधाम एवं भव्यता के साथ मनाया गया।

कैरम टूनामेंट- 26.03.2019 से 27.03.2019 को क्लब हॉल में अंतर-अनुभागीय कैरम टूर्नामेंट आयोजित किया गया जिसके लिए विजयी एवं विजेता के लिए 2 रोलिंग ट्रॉफी का समावेशन किया गया। प्रशासन के श्री तपास साहा, व.ले.प. व श्री चंद्रभान प्रसाद, एम.टी.एस. विजयी हुये और अभिलेख एवं पत्राचार अनुभाग से श्री पोलाश दास, एम.टी.एस. व भरत गोंड, लिपिक विजेता रहे।

फोटोग्राफी प्रदर्शनी- 28.03.2019 से 29.03.2019 को क्लब हॉल में फोटोग्राफी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। लगभग 100 तस्वीरों को प्रदर्शनी में जगह दी गयी थी। तस्वीरों को तीन वर्गों में बाँटा गया। वर्गानुसार पुरस्कृत कार्मिक;-

- श्री परेश चन्द्र दास, वरिष्ठ लेखापरीक्षक को वन्य जगत हेतु।
- श्री तपन मजूमदार, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी को मानव जगत हेतु।
- श्री इंद्रजीत भट्टाचार्य, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी को प्रकृति हेतु।